

पलटू साहिब की बानी

भाग पहला

कुंडलिया

[All Rights Reserved]

[कोई साहिब बिना इजाजत के इस पुस्तक को नहीं छाप सकते]

मुद्रक व प्रकाशक

लेखीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद

सन् १९८० ई०

[मूल्य ५]

294.564
PAL

**Centre for the Study of
Developing Societies**

29, Rajpur Road,

DELHI - 110 054.

पलटू साहिब की बानी

भाग पहल

कुंडलिया

जिसमें

उनकी २६८ अति मधुर, मनोहर और

उपकार कुंडलियाँ जीवन-चरित्र

और टिप्पणी सहित

छपी हैं।

[All Rights Reserved]

[कोई साहिब बिना इजाजत के इस पुस्तक को नहीं छाप सकते]

मुद्रक व प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,

इलाहाबाद

ग्यारहवाँ संस्करण]

सन् १९५० ई०

[मूल्य १]

जीवन-चरित्र

महात्मा पलटूदासजी (पलटू साहिब) के जीवन-चरित्र के हम बहुत दिनों से खोज में हैं परन्तु कहीं से पूरा हाल आज तक नहीं मिला यद्यपि कितने ही ग्रन्थ देखे गये और देश देशान्तर के साधुओं, विद्वानों और निज पलटूपंथी महन्तों से दरियाफ्त किया गया। पलटूदासजी के सगे भाई और परम भक्त पलटूप्रसाद ने (जिनका संसारी नाम कुछ और ही था) अपनी “भजनावली” नामक पुस्तक में थोड़ा सा हाल लिखा है जिससे निश्चय होता है कि पलटू साहिब ने नगपुरजलालपुर गांव में एक काँदू बनिया के कुल में जन्म लिया जिसे “भजनावली” में नंगाजलालपुर के नाम से लिखा है। यह गाँव फैजाबाद के जिले में आजमगढ़ के पच्छिम सीमा से मिला हुआ है, नंगाजलालपुर नाम का कोई गाँव आजमगढ़ या फैजाबाद के जिले में नहीं है। यहीं उनके पुरोहित गोबिंदजी महाराज रहते थे और दोनों ने बाबा जानकीदास नामक साधू से उपदेश लिया था, पर उनकी शांति नहीं हुई इस लिये सार वस्तु की खोज में दोनों निकले। गोबिंदजी जगन्नाथपुरी को जाते थे कि रास्ते में भीखा साहिब के दर्शन मिले जिनसे गुप्त भेद प्राप्त हुआ। तब गोबिंदजी पलटू साहिब के पास लौट कर आये और उनसे सार वस्तु का उपदेश लेकर पलटू साहिब ने उन्हें गुरु धारण किया।

भजनावली के तीन दोहे यहां लिखे जाते हैं :—

नंगाजलालपुर जन्म भयो है, वसे अवध के खोर।
कहैं पलटूप्रसाद हो, भयो जक्त में सोर॥
चार बरन को मेटि के, भक्ति चलाई मूल।
गुरु गोबिंद के बाग में, पलटू फूले-फूल॥
सहर जलालपुर मूड़ मुड़ाया, अवध तुड़ा करधनियाँ।
सहज करें व्योपार घट में, पलटू निगुन बनियाँ॥

पलटू साहिब उन्नीसवें शतक विक्रमीय में वर्तमान थे—अवध के नौबाब शुजाउ-द्दौला और हिन्दुस्तान के बादशाह शाह आलम इनके समकालीन थे, जिनको हुए डेढ़सौ बरस का जमाना बीता। यह महात्मा सदा-गृहस्थ आश्रम में रहे और इनके वंश के लोग अब तक नंगापुरजलालपुर के गाँव में मौजूद हैं।

पलटू साहिब बहुत काल तक फैजाबाद के अयोध्या नगर में विराजमान थे जहां उन्होंने अपना सतसंग खड़ा किया और अपने उपदेश से अनेक जीवों को चिताया। इसी स्थान पर उन्होंने शरीर त्याग किया और वहां उनकी समाधि और संगत अब तक मौजूद है। और जगहों में भी इन महात्मा के अनुयाइयों की संगत हैं और पलटूपंथी साधू और गृहस्थ तो थोड़े बहुत भारतवर्ष के हर विभाग में पाये जाते हैं।

पलटू साहिब की प्रचंड महिमा और कीर्ति को देखकर अयोध्या और आस पास के अखाड़ों के बैरागियों के चित्त में बड़ी जलन और ईर्ष्या पैदा हुई जिसका इशारा पलटू साहिब ने अपनी बानी में भी जगह-जगह पर किया है। कहते हैं कि यह ईर्ष्या इतनी बड़ी कि इन दुष्टों ने गुट करके पलटू साहिब को जीते जी जला दिया परन्तु उसी समय और उसी देह से वह फिर जगन्नाथपुरी में प्रगट हुए और तत्काल ही फिर लुप्त हो गये। इसके प्रमाण में यह साखी दी हुई है :—

अवधपुरी में जरि मुए, दुष्टन दिया जराइ।
जगन्नाथ की गोद में, पलटू सूते जाइ॥

इनके बहुत से चमत्कार और मोजजे मुर्दों के जिलाने इत्यादि के प्रसिद्ध हैं जिनके यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं है।

अधम

विषय-सूची

पूरा सतगुरु मिलै जो	१	काल महासिल	२१	लागी गांसी	४२
सतगुरु सिकलीगर मिलै	१	ज्यों ज्यों सूखै	२१	जियतै मरना	४२
सरबंगी कोउ एक है	२	बूड़ी जात जहाज	२२	परिवरता को	४२
परस्वारथ के कारने	२	एक भक्ति मैं	२२	सोई सती सराहिये	४३
धुन आनै जो	२	संत न चाहै	२३	हरि को दास	४३
नाव मिली केवट	३	ऐसी भक्ति	२३	अपनी ओर	४४
धुबिया फिर मर	३	मेरे तन तन लग	२४	काजर दिहै से	४४
साहिब वहीं फकीर	३	पिय को खोजन	२४	जाकी जैसी	४४
रैयत कौन कहावै	४	मगन भई मेरी	२४	टेढ़ सोझ	४५
जग खीजै तो	४	आठ पहर निरखत	२५	फूलो है यह	४५
नाम नाम सब	५	अम्मा मेरा दिल	२५	गुरु की भक्ति	४६
लहना है सतनाम	५	सीस उतारै हाथ	२५	पलटू जो सिर	४६
मीठ बहुत सतनाम	५	भूली जग की	२६	राम कृष्ण	४६
संत सनेही नाम	६	फनि से मनि	२६	समुझावै सो	४७
दीपक बारा	६	प्रेम बान जा	२७	तुझे पराई	४७
नाम के रे परताप	७	अपने पिय की	२७	बहता पानी	४८
देखो नाम ताप	७	सतगुरु सब्द के	२७	जिन जिन पाया	४८
हाथी घोड़ा खाक	७	की तौ इक	२८	बीज बासना	४८
हाथ जोरि	८	यह तो घर है	२८	तो कहूँ कोऊ कछु	४९
अदल होइ	८	आसिक का घर	२८	इहाँ उहाँ कुछ है	४९
देत लेत हैं	८	जहाँ तनिक जल	२९	मन को मौज	५०
बड़ा होय तेहि	९	जो मैं हारौं	२९	जो साहिब का	५०
सीतल चन्दन	९	लगन महरत	३०	जीव जाय तो	५१
संत बराबर	१०	मोर राम मैं	३०	खोजत हीरा को	५१
राम समीपी	१०	मगन आपने	३०	मूरख को	५१
संत सासना	१०	जो कोउ चाहै	३१	तीन लोक पेरागया	५२
संतन के सिर	११	बैरागिनी भूली	३१	लोक लाज कुल	५२
तीन लोक से	११	मलया के	३२	तन मन लज्जा	५२
फाका जिकर	१२	पारस के परसंग	३२	लोक लाज नहि	५३
कबही फाका	१२	फिर फिर नहीं	३२	जेहि सुमिरे गनिका	५३
साघ महातम	१२	जंगल जंगल मैं	३३	ज्यों ज्यों भीजै	५४
हरि हरिजन	१३	बिन छाये चित	३३	वे बोलैं में	५४
हरि अपनो	१३	जो जो गा	३३	जौ लगि लागै	५४
काम क्रोध जिन	१४	पलटू मेरी बानि	३४	दुइ पासाही	५५
ना काहू से	१४	सतगुरु सब को	३४	चोर मुँसि	५५
पिसना पीसै राँड़	१४	सबद छुड़ावै	३५	पलटू ऐसे दास को	५६
पार दुख कारन	१५	सुरत सब्द	३५	बुझि समुझि ले	५६
बिस्वा किये	१५	जोग जुगत आसन	३५	पलटू नीच से ऊंच	५६
हवा हिरिस	१६	कमठ दृष्टि	३६	हस्ती बिनु मारे मरै	५७
जौ लगि फाटै	१६	जैसे कामिनी	३६	स्वांती को जल	५७
क्या सोवै तू	१६	साहिब साहिब क्या	३७	भक्ति बीज	५८
खेलु सिताबी	१७	दिल में आवै	३७	पलटू सरबसदीजिए	५८
ते क्यों गफलत	१७	खोजत खोजत	३७	छवा टूटै छवा फाटै	५८
गरमै गरमै	१८	नजर मँहै	३८	परदा अंदर का टरै	५९
सुर नर मुनि	१८	पहिले दासातन	३८	समुझाये से क्या	५९
चोला भया	१८	तुरत पदम-पद	३९	जान समाधि जा	६०
धृआं का धीरेहरा	१९	खामिद कब	३९	समुझे को	६०
यही दिदारी दार	१९	संत चढ़े मैदान	४०	अपनी अपनी करनी	६०
आग लगी लंका	१९	बाना बाँधे लड़ि	४०	सरबंगी जो	६१

भजन आतुरी	२०	काया कोट छुड़ावै	४०	करम धरम	६१
यही समय	२०	संत चढ़े जो	४१	पलटू सोवै	६२
भया तगादा	२१	लागी गोली	४१		
कोउ कितनौ	६२	अंधरन केरि	७७	जा को निरगुन	६३
जौन काछ की	६२	सब अंधरन	७८	अमृत को	६३
साधु को ऐसा	६३	अपकारी जिव	७८	जैसे नही	६३
पतित पावन बाना	६३	बनियां बानि	७९	साध बचन	६४
दोनन पर दाय़ा	६४	संत रतन	७९	महीं भुलाना	६४
पलटू पूछै	६४	अंजन देय	७९	जगत भगत	६४
मन मिहीन	६४	जौ लगि	८०	लेहु परोसिनि	६४
जोग जुगत ना	६५	बस्तु धरी दै	८०	सिध चौखसी	६५
दूसरा पलटू इक	६५	झूठे में सब	८१	हंस चुगै	६६
मान बढ़ाई	६६	लड़िका चूल्हे	८१	कृष्ण कन्हैया	६६
खुदी खोय	६६	सूधी मारंग	८१	गिरहस्थी में	६६
सब कोइ पीवै	६६	भरमि भरमि	८२	भरि भरि पेट	६७
बढ़ते बढ़ते बढ़ि	६७	संत चरन	८२	कौड़ो गाँठि	६७
उलटा कूवा	६७	लिये कुल्हाड़ी	८३	जब देखो	६८
बंसी बाजी	६८	सात पुरी हम	८३	रन का	६८
चढ़ें चौमहले	६८	घर में मेवा	८३	आगि लागि	६९
चांद सूरज	६८	लम्बा घूँघट	८४	तबक चारदह	६९
बिनु कागद	६९	बहुत पुरुष के	८४	बस्ती माहि	१००
झंडा गड़ा है	६९	पलटू तन करू	८४	कुत्ता हाँड़ी	१००
जागत में	७०	सूधी मेरी चाल	८५	जा के रथ	१००
जल से उठत	७०	मैं अपने रंग	८५	होनी रही सो	१०१
कोटिन जुग	७०	लहम कुल्लहुम	८६	सिव सक्ती	१०१
आदि अंत हम	७१	गरदन मारै	८६	ऐसा ब्राह्मन	१०१
गंगा पाछे को	७१	हरि को भजै	८६	सब बैरागी	१०२
खसम विचारा	७२	साहिब के दरबार	८७	हींग लगाइस	१०२
खसम मुवा	७२	गनिका गिद्ध	८७	घरिया औटै	१०३
मन मारे	७२	निन्दक जीवै	८८	सतगुरु के	१०३
माया ठगनी जग	७३	निन्दक रहै	८८	दूसर जनमत	१०४
माया बड़ी	७३	निन्दक है	८९	आगि लगे	१०४
माया की चक्की	७४	बनिया पुरा	८९	यह अचरज	१०४
नागिनि पैदा	७४	भीतर औटै	८९	मुसलमान रब्बी	१०५
कुसल कहां से	७४	बार बार बिनती	९०	नाचन को ढंग	१०५
पूरब पच्छिम	७५	सुरति सुहागिनी	९०	पलटू खोजै पूरबे	१०६
मन माया छोड़ै	७५	कहं खोजन	९१	आन को सेंदुर	१०६
घर में जिदा	७६	मन माया में	९१	पलटू पारस नाम	१०६
जियतै देइ	७६	देखो जिउ	९१	कहत फिरत हम	१०७
पानी का को	७६	मुए पार	९२	जल पषान को	१०७
लहंगा परिगा	७७	चिन्ता रूपी	९२		

पलटू साहिब की बानी भाग १

(कुंडलिया)

॥ गुरुदेव ॥

(१)

पूरा सतगुरु मिलै जो पूजै मन की आस ॥
पूजै मन की आस पिया को देय मिलाई ।
छूटा सब जंजाल बहुत सुख हम ने पाई ॥
देखा पिय का रूप फिर अहिबात^१ हमारा ।
बहुत दिनन की राँड माँग भर सेंदुर धारा ॥
सासु ननद^२ को मारि अदल में दिहा चलाई ।
उन कै चलै न जोर पिया को मैहि सुहाई ॥
पिय जो बस में भये पिया को जादू कीन्हा ।
ऐसी लागी नेह पिया तब मोको चीन्हा ॥
प्रसाद पिया को पाय के मिले गुरु पलटूदास ।
पूरा सतगुरु मिलै जो पूजै मन की आस ॥

(२)

सतगुरु सिकलीगर मिलै तब छुटै पुराना दाग ॥
छुटै पुराना दाग गड़ा मन मुरचा माहीं ।
सतगुरु पूरे बिना दाग यह छुटै नाहीं ॥
भाँवाँ लेवै जोग तेग को मलै बनाई ।
जौहर देय निकार सुरत को रंद चलाई ॥
सब्द मस्कला करै ज्ञान का कुरँड^३ लगावै ।
जोग जुगत से मलै दाग तब मन का जावै ॥
पलटू सैफ^४ को साफ करि बाढ़ धरै बैराग ।
सतगुरु सिकलीगर मिलै तब छुटै पुराना दाग ॥

(१) सुहाग । (२) माया और वासना । (३) एक तरह का पत्थर जो सिकल करने के काम में आता है । (४) तलवार ।

(३)

सरबंगी कोउ एक है राखै सब की लाज ॥
 राखै सब की लाज काज वो सब के आवैं ॥
 अंधा पंगुल लूल सबन को डगर बतावैं ॥
 मारि पीटि संसार सभन को राह चलावैं ॥
 उनकी मागी खाइ भेष सब रोटी पावैं ॥
 बड़े बहादुर मर्द भेष का परदा राखैं ॥
 सुनि कै बचन कठोर संत जन जनि कोऊ भाखैं ॥
 पलटू जो कोउ संत है सब हमरे सिस्ताज ॥
 सरबंगी कोउ एक है राखै सब की लाज ॥

(४)

पर स्वारथ के कारने संत लिया औतार ॥
 संत लिया औतार जगत को राह चलावैं ॥
 भक्ति करैं उपदेस ज्ञान दे नाम सुनावैं ॥
 प्रीत बढ़ावैं जक्त में धरनी पर डोलैं ॥
 कितनौ कहै कठोर बचन बे अमृत बोलैं ॥
 उनको क्या है चाह सहत हैं दुःख घनेरा ॥
 जिव तारन के हेतु मुलुक फिरते बहुतेरा ॥
 पलटू सतगुरु पाय के दास भया निरवार ॥
 पर स्वारथ के कारने संत लिया औतार ॥

(५)

धुन आनै जो गगन की सो मेरा गुरुदेव ॥
 सो मेरा गुरुदेव सेवा में करिहौं वा की ॥
 सब्द में है गलतान^१ अवस्था ऐसी जा की ॥
 निस दिन दसा अरुढ़ लगै ना भूख पियासा ॥
 ज्ञान भूमि के बीच चलत है उलटी स्वासा ॥

तुरिया सेती अतीत सोधि फिर सहज समाधी ।
भजन तेल की धार साधना निर्मल साधी ॥
पलटू तन मन वारिये मिलै जो ऐसा कोउ ।
धुन आनै जो गगन की सो मेरा गुरुदेव ॥

(६)

नाव मिली केवट नहीं कैसे उतरै पार ॥
कैसे उतरै पार पथिक बिस्वास न आवै ।
लगै नहीं बैराग यार कैसे कै पावै ॥
मन में धरै न ज्ञान नहीं सतसंगति रहनी ।
बात करै नहिं कान प्रीति बिन जैसे कहनी ॥
छूटि डगमगी नाहिं संत को बचन न मानै ।
मूरख तजै बिबेक चतुर्ई अपनी आनै ॥
पलटू सतगुरु सब्द का तनिक न करै बिचार ।
नाव मिली केवट नहीं कैसे उतरै पार ॥

(७)

धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय ॥
चादर लीजै धोय मैल है बहुत समानी ।
चल सतगुरु के घाट भरा जहं निर्मल पानी ॥
चादर भई पुगनि दिनों दिन बार न कीजै ।
सतसंगत में सौंद ज्ञान का साबुन दीजै ॥
छूटै कलमल दाग नाम का कलप लगावै ।
चलिये चादर ओढ़ि बहुर नहिं भवजल आवै ॥
पलटू ऐसा कीजिये मन नहिं मैला होय ।
धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय ॥

(८)

साहिब वही फकीर है जो कोइ पहुँचा होय ॥
जो कोइ पहुँचा होय नूर का छत्र बिराजै ।

सबर तखत पर बैठि तूर अठपहरा बाजै ॥
 तम्बू है असमान जमी का फरस बिछाया ।
 छिमा किया छिड़काव खुसी का मुस्क लगाया ॥
 नाम खजाना भरा जिकिर का नेजा चलता ।
 साहिब चौकीदार देखि इबलीसहुँ^१ डरता ॥
 पलटू दुनिया दीन में उनसे बड़ा न कोय ।
 साहिब वही फकीर है जो कोई पहुँचा होय ॥

(६)

रैयत कौन कहावै घर घर हाकिम होय ॥
 घर घर हाकिम होय अदल फिर कौन चलावै ।
 सब नायक होइ जाय बैल फिर कौन लदावै ॥
 गदहा चलै हर बैल कौन फिर बेसहै तुरकी^२ ।
 मिलै कृप में मुक्ति गंग को देवै बुड़की ॥
 काँच छुए होइ कनक पारस की रहै न इच्छा ।
 घर घर सम्पति होइ कौन फिरि माँगै भिच्छा ॥
 पलटू तैसे संत हैं भेष बनावै कोय ।
 रैयत कौन कहावै घर घर हाकिम होय ॥

(१०)

जग खीमै तो का भया रीमै सतगुरु संत ॥
 रीमै सतगुरु संत आस कुछ जग की नाही ।
 एक द्वार को छोड़ और ना माँगन जाही ॥
 जिउ मेरो बरु जाय जन्म बरु जाय नसाई ।
 करों न दूसर आस संत की करों दुहाई ॥
 तीन लोक रिसियाय^३ सकल सुर नर और नारी ।
 मोर न बाँके बार पटंगा पाया भारी ॥
 पलटू सब रोवै पड़ा मोर भया सलतंत ।

जग खीझै तो का भया रीझै सतगुरु संत ।

॥ नाम ॥

(११)

नाम नाम सब कहत है नाम न पाया कोय ॥

नाम न पाया कोय नाम की गति है न्यारी ।

वही सकस^१ को मिलै जिन्होंने आसा मारी ॥

हों को करै खमोस होस ना तन को राखै ।

गगन गुफा के बीच पियाला प्रेम का चाखै ॥

बिसरै भूख पियास जाय मन रँग में लागै ।

पाँच पचीस रहे वार संग में सोऊ भागै ॥

आपुइ रहै अकेल बोलै बहु मीठी बानी ।

सुनतै अब वह बनै कहा मैं कहौं बखानी ॥

पलटू गुरु परताप तें रहै जगत में सोय ।

नाम नाम सब कहत है नाम न पाया कोय ॥

(१२)

लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय ॥

जो चाहै सो लेय जायगी लूट ओराई^२ ।

तुम का लुटिहौ यार गाँव जब दहिहै^३ लाई ॥

ताकै कहा गँवार मोट भर बाँध सिताबी ।

लूट में देरी करै ताहि की होय खराबी ॥

बहुरि न ऐसा दाँव नहीं फिर मानुष होना ।

क्या ताकै तू ठाढ़ हाथ से जाता सोना ॥

पलटू मैं उत्तुन भया मोर दोस जिन देय ।

लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय ॥

(१३)

मीठ बहुत सतनाम है पियत निकारै जान ॥

पियत निकारै जान मरै की करै तयारी ।

सो वह प्याला पियै सीस को धरै उतारी ॥
 आँख मूँढ़ि कै पियै जियन की आसा त्यागै ।
 फिरि वह होवै अमर मुए पर उठि कै जागै ॥
 हरि से वे हैं बड़े पियो जिन हरि रस जाई ।
 ब्रह्मा बिस्नु महेस पियत कै रहे डेराई ॥
 पलटू मेरे बचन को ले जिज्ञासू मान ।
 मीठ बहुत सतनाम है पियत निकारै जान ॥

(१४)

संत सनेही नाम है नाम सनेही संत ।
 नाम सनेही संत नाम को वही मिलावैं ॥
 वे हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावैं ।
 जप तप तीरथ बरत करै बहुतेरा कोई ॥
 — बिना वसीला संत नाम से भेंट न होई ।
 कोटिन करै उपाय भटक सगरौ^१ से आवै ॥
 संत दुवारे जाय नाम को घर तब पावै ।
 पलटू यह है प्रान पर^२ आदि सेती औ अंत ॥
 संत सनेही नाम है नाम सनेही संत ।

(१५)

दीपक बार नाम का महल भया उजियार ॥
 महल भया उजियार नाम का तेज बिराजा ।
 सब्द किया परकास मानसर^३ ऊपर छाजा ॥
 दसो दिसा भई सुद्ध बुद्ध भई निर्मल साची ।
 छुटी कुमति की गाँठि सुमति परगट होय नाची ॥
 होत छतीसो राग दाग तिर्गन का छूटा ।
 पूरन प्रगटे भाग करम का कलसा फूटा ॥
 पलटू अधियारी मिटी बाती दीन्ही टार ॥

दीपक बारा नाम का महल भया उजियार ॥

(१६)

नाम के रे परताप से भये आन कै आन ॥

भये आन कै आन बड़े के पाँव पहुँगा ॥

का बपुरा तिल तेल फूल संग बिकता महँगा ॥

संत हैं बड़े दयाल आप सम मो को कीन्हा ॥

जैसे भृङ्गी कीट सिच्छा कुछ ऐसी दीन्हा ॥

राई किहा सुमेर अजया गजराज चढ़ाई ॥

तुलसी होइगा रेंड सरन की पैज बड़ाई ॥

पलटू जातिन नीच मैं सब औगुन की खान ॥

नाम के रे परताप से भये आन कै आन ॥

(१७)

देखौ नाम प्रताप से सिला तिरै^१ जल बीच ॥

सिला तिरै जल बीच सेत^२ में कटक^३ उतारी ॥

नामहिं के परताप बानरन^४ लंका जारी ॥

नामहिं के परताप जहर मीरा ने खाई ॥

नामहिं के परताप बालक पहलाद बचाई ॥

पलटू हरि जस ना सुनै ता को कहिये नीच ॥

देखौ नाम प्रताप से सिला तिरै जल बीच ॥

(१८)

हाथी घोड़ा खाक है कहै सुनै सो खाक ॥

कहै सुनै सो खाक खाक है मुलुक खजाना ॥

जोरु बेठा खाक खाक जो साचै माना ॥

महल अटारी खाक खाक है बाग बगैचा ॥

मेत सपेदी खाक खाक है हुक्का नैचा ॥

साल दुसाला खाक खाक मोतिन के माला ॥

नौबतखाना खाक खाक है ससुरा साला ॥

(१) तैरती है । (२) पुल । (३) फौज, सेना । (४) बन्दरों ने ।

पलटू नाम खुदाय का यही सदा है पाक ।
हाथी घोड़ा खाक है कहै सुनै सो खाक ॥

(१६)

हाथ जोरि आगे मिलै लै लै भेट अमीर ॥
लै लै भेट अमीर नाम का तेज बिराजा ।
सब कोउ रगै नाक आइ कै परजा राजा ॥
सकलदार^१ मैं नहीं नीच फिर जाति हमारी ।
गोड़ धोय पट करम बरन पीवै लै चारी ॥^२
बिन लसकर बिन फौज मुलुक में फिरी दुहाई ।
जन महिमा सतनाम आपु में सखस बढाई ॥
सत्तनाम के लिहे से पलटू भया गंभीर ।
हाथ जोरि आगे मिलै लै लै भेट अमीर ॥

॥ सामर्थ्य ॥

(२०)

अदल होइ बैकुण्ठ में सब कोइ पावै सुख ॥
सब कोइ पावै सुख अमल है तेज^३ तुम्हारा ।
भौसागर के बीच लगै ना उतरत बारा ॥
लेइ तुम्हारे नाम ताहि को बार न बाँकै ।
खुले-बंद^४ वह जाइ तनिक जमदूत न ताकै ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस नाम सुनि उठै डेराई ।
तीनि लोक के बीच फिरै ना आन दुहाई ॥
पलटू तेरी साहिबी जीव न पावै दुख ॥
अदल होइ बैकुण्ठ में सब कोइ पावै सुख ॥

(२१)

देत लेत हैं आपुही पलटू पलटू सोर ॥
पलटू पलटू सोर राम की ऐसी इच्छा ।

(१) खूबसूरत । (२) छही कर्म वाले और चारो वरत के लोग चरनामृत लेकर पीते हैं । (३) प्रचंड । (४) बिना रोक टोक के ।

कौड़ी घर में नाहिं आपु मैं माँगों भिच्छा ॥
 राई परबत करें करें परबत को राई ।
 अदना के सिर छत्र पैज की करें बड़ाई ॥
 लीला अगम अपार सकल घट अंतरजामी ।
 खाँहि खिलावहि राम देहिं हम को बदनामी ॥
 हम सों भया न होयगा साहिब करता मोर ।
 देत लेत हैं आपुहीं पलटू पलटू सोर ॥

॥ संत और साध ॥

(२२)

बड़ा होय तेहि पूजिये संतन किया बिचार ॥
 संतन किया बिचार ज्ञान का दीपक लीन्हा ।
 देवता तैंतिस कोट नजर में सब को चीन्हा ॥
 सब का खंडन किया खोजि के तीनि निकास ।
 तीनों में दुइ सही मुक्ति का एकै द्वारा ॥
 हरि को लिया निकारि बहुर तिन मंत्र बिचारा ।
 हरि हैं गुन के बीच संत हैं गुन से न्यारा ॥
 पलटू प्रथमै संत जन दूजे हैं करतार ।
 बड़ा होय तेहि पूजिये संतन किया बिचार ॥

(२३)

सीतल चन्दन चन्द्रमा तैसे सीतल संत ॥
 तैसे सीतल संत जगत की ताप बुझावैं ।
 जो कोई आवै जस्त मधुर मुख बचन सुनावैं ॥
 धीरज सील सुभाव छिमा ना जात बखानी ।
 कोमल अति मृदु बैन बज्र को करते पानी ॥
 रहन चलन मुसकान ज्ञान को सुगंध लगावैं ।
 तीन ताप मिट जाय संत के दर्शन पावैं ॥
 पलटू ज्वाला उदर की रहै न मिटै तुरंत ।

सीतल चन्दन चन्द्रमा तैसे सीतल संत ॥

(२४)

संत बराबर कोमल दूसर को चित नाहिं ॥
 दूसर को चित नाहिं करें सब ही पर दाया ।
 हित अनहित सब एक असुभ सुभ हाथ बनाया ॥
 कोमल कुसुमी चाह^१ नहीं सुपने में दूषन ।
 देखैं परहित लागि प्रेम रस चूखैं ऊखन^२ ॥
 मिलनसार मुसकान बचन मृदु बोली मीठी ।
 पुलकित सीतल गात सुभग स्तनारी दीठी^३ ॥
 पलटू कौनो कछु कहै तनिको ना अकुताहिं ।
 संत बराबर कोमल दूसर को चित नाहिं ॥

(२५)

राम समीपी संत हैं वे जो करें सो होय ॥
 वे जो करें सो होय हुकुम में उन के साहिब ।
 संत कहैं सोइ करें राम ना करते बायब^४ ॥
 राम के घर के बीच काम सब संतै करते ।
 देवता तेंतिसकोट संत से सबही डरते ॥
 राई पर्वत करें करें परबत को राई ।
 राम के घर के बीच फिरत है संत दुहाई ॥
 पलटू घर में राम के और न करता कोय ।
 राम समीपी संत हैं वे जो करें सो होय ॥

(२६)

संत सासना सहत हैं जैसे सहत कपास ॥
 जैसे सहत कपास नाय चरखा में ओटै ।
 रूई धर जब तुमै हाथ से दोऊ निभोटै ॥

(१) कुसुम फूल के समान वृत्ति जो बड़ा नाजुक होता है । (२) गन्ने चूसै ।
 (३) दृष्टि । (४) खिलाफ ।

रोम रोम अलगाय पकरि कै धुनिया धूनी ।
 पिउनी^१ नह^२ दै कात सूत ले जुलहा बूनी ॥
 धोबी भट्टी पर धरी कुन्दीगर मुँगरी मारी ।
 दरजी टुक टुक फारि जोरि कै किया तयारी ॥
 पर-स्वारथ के कारने दुख सहै पलटूदास ।
 संत सासना सहत हैं जैसे सहत कपास ॥

(२७)

संतन के सिर ताज है सोई संत होइ जाय ॥
 सोई संत होइ जाय रहै जो ऐसी रहनी ।
 मुख से बोलै साच करै कछु उज्जल करनी ॥
 एक भरोसा करै नहीं काहू से माँगै ।
 मन में करै संतोष तनिक ना कबहूँ लागै ॥
 भली बुरी कोउ कहै ताहि सुन नहिं मन माखै^३ ।
 आठ पहर दिन रात नाम की चरचा राखै ॥
 पलटू रहै गरीब होय भूखे को दे खाय ।
 संतन के सिर ताज है सोई संत होइ जाय ॥

(२८)

तीन लोक से जुदा है उन संतन की चाल ॥
 उन संतन की चाल करम से रहते न्यारे ।
 लोभ मोह हंकार ताहि की गरदन मारे ॥
 काम क्रोध कछु नाहिं लगै ना भूख पियासा ।
 जियतै मिर्तक रहैं करैं ना जग की आसा ॥
 ऋद्धि सिद्धि को देख देत हैं खाक चलाई ।
 माया से निर्विर्त भजन की करैं बड़ाई ॥
 समै चबैना काल का पलटू उन्हें न काल ।
 तीन लोक से जुदा है उन संतन की चाल ॥

(१) रुई की मोटी बत्ती जिस से सूत निकालते हैं । (२) नाखून । (३) रोस करे ।

(२६)

फाका जिकर किनात^१ ये तीनों बात जगीर ॥
 तीनों बात जगीर खुसी की कफनी डारै ।
 दिल को करै कुसाद^२ आई भी रोजी डारै ॥
 इबादत^३ दिन रात याद में अपनी रहना ।
 खुदी खूब को खोइ जनाजा^४ जियतै करना ॥
 सीकन्दर और गदा^५ दोऊ को एकै जानै ।
 तब पावै टुक नसा फना^६ का प्याला छानै ॥
 पलटू मस्त जो हाल में तिसका नाम फकीर ।
 फाका जिकर किनात ये तीनों बात जगीर ॥

(३०)

कबही फाका फकर है कबही लाख करोर ॥
 कबही लाख करोर गमी सादी कछु नाहों ।
 ज्यों खाली त्यों भरा सबुर है मन के माहों ॥
 कबही फूलन सेज हाथी की है असवारी ।
 कबही सोवै भुईं पियादे मँजिल गुजारी ॥
 कबही मलमल जरी ओढ़ते साल दुसाला ।
 कबही तापै आग ओढ़ि रहते मृगछाला ॥
 पलट वह यह एक है परालब्ध नाहि जोर ।
 कबही फाका फकर है कबही लाख करोर ॥

(३१)

साध महातम बड़ा है जैसो हरि यस होय ॥
 जैसो हरि यस होय ताहि को गरहन कीजै ।
 तन मन धन सब वारि चरन पर तेकरे दीजै ॥
 नाम से उत्पति राम संत आनाम^७ समाने ।

(१) उपास, सुमिरन और संतोष । (२) उदार । (३) आराधना । (४) रथी या टिकठी मुरदे के ले जाने की । (५) सिकन्दर बादशाह और भिखारी । (६) मौत । (७) अनामी पद में ।

सब से बड़ा अनाम नाम की महिमा जाने ॥
 संत बोलते ब्रह्म चरन कै पियै पखारन ।
 बड़ा महापरसाद सोत संतन कर छाड़न ॥
 पलटू संत न होवते नाम न जानत कोय ।
 साध महातम बड़ा है जैसो हरि यस होय ॥

(३२)

॥ भक्त जन ॥

हरि हरिजन को दुइ कहै सो नर नरकै जाय ॥
 सो नर करकै जाय हरिजन हरि अंतर नाहीं ।
 फूलन में ज्यों बास रहै हरि हरिजन माहीं ॥
 संत रूप अवतार आप हरि धरि कै आये ।
 भक्ति करे उपदेस जगत को राह चलाये ॥
 और - धरै अवतार रहै निर्गुन संजुक्ता ।
 संत रूप जब धरै रहै निर्गुन से मुक्ता ॥
 पलटू हरि नारद सेतो बहुत कहा समुझाय ।
 हरि हरिजन को दुइ कहै सो नर नरकै जाय ॥

(३३)

हरि अपनो अपमान सह जन की सही न जाय ॥
 जन की सही न जाय दुर्बासा की क्या गत कीन्हा ।
 भुवन चतुर्दस फिरे समै दुरियाय जो दोन्हा ॥
 पाहि पाहि करि परै जबै हरि चरनन जाई ।
 तब हरि दान्ह जवाब मोर बस नाहि गुसाई ॥
 मोर दोह करि बचै करौं जन दोहक नासा ।

(१) दुर्बासा ऋषि ने भक्त शिरोमणि राजा अंबरोक का प्रण तोड़ने को एकादशी व्रत के पारन के लिए द्वादशी का न्योता राजा का माना । जब द्वादशी बीतने लगी और ऋषि जी न आये तो राजा ने व्रत का धर्म्म निवाहने को शालिग्राम का चरणामृत लिया कि तुम ऋषि जी पहुँचे और सराप देना चाहो । यह अनर्थ देख कर विष्णु ने सुदर्शन चक्र को उन पर छोड़ा जिस से बचने को वह आप विष्णु तक की शरण में गये लेकिन कोई उन्हें न बचा सका जब तक कि वह राजा अंबरोक की शरण में न आये ।

माफ करै अंबरीक बचौगे तब दुर्बासा ॥
 पलटू द्रोही संत कर तिन्हें सुदर्सन खाय ।
 हरि अपनो अपमान सह जन की सही न जाय ॥

(३४)

काम क्रोध जिन के नहीं लगै न भूख पियास ॥
 लगै न भूख पियास रहै तिरगुन से न्यारा ।
 लोभ मोह हंकार नींद की गर्दन मारा ॥
 सत्रु मित्र सब एक एक है राजा रंका ।
 दुख सुख जीवन मरन तनिक ना व्यापै संका ॥
 कंचन लोहा एक एक है गरमी पाला ।
 अस्तुति निन्दा एक एक है नगन दुसाला ॥
 पलटू उन के दरस से होत पाप को नास ।
 काम क्रोध जिन के नहीं लगै न भूख पियास ॥

(३५)

ना काहू से दुष्टता ना काहू से रोच^१ ॥
 ना काहू से रोच दोऊ को इक-रस जाना ।
 बैर भाव सब तजा रूप अपना पहिचाना ॥
 जो कंचन सो काँच दोऊ की आसा त्यागी ।
 हारि जोत कछु नाहिं प्रीति इक हरि से लागी ॥
 दुख सुख संपति बिपति भाव ना यहु से दूजा ॥
 जो बाम्हन सो सुपच^२ दृष्टि सम^३ की पूजा ॥
 ना जियने की खुसी है पलटू मुए न सोच ।
 ना काहू से दुष्टता ना काहू से रोच ॥

॥ पाखंडी ॥

(३६)

पिसना पीसै राँड़ री पिउ पिउ करै पुकार ॥

पिउ पिउ करै पुकार जगत को प्रेम दिखावै ।
 कहवै कथा पुरान पिया को तनिक न भावै ॥
 खिन रोवै खिन हँसै ज्ञान की बात बतावै ।
 आप न रीझै भाँड़ और को बैठि रिझावै ॥
 सुनै न वा की बात तनिक जो अंतर जानी ।
 चाहै भेटा पीव चलै ना सुपथ रहानी ॥
 पलटू ऊपर से कहै भीतर भरा बिकार ।
 पिसना पीसै राँड़ री पिव पिव करै पुकार ॥

(३७)

पर दुख कारन दुख सहै सन असंत है एक ॥
 सन असंत है एक काट के जल में सारै ।
 कूँचै खेंचै खाल उपर से मुँगरा मारै ॥
 तेकर बटि के भाँजि भाँजि के बरतै रसरा ।
 नर की बाँधै मुसुक बाँधते गउ और बछरा ॥
 अमरजाल फिर होय बझावै जलचर^१ जाई ।
 खग मृग जीवा जंतु तेही में बहुत बझाई ॥
 जिव दे जिव संतावते^२ पलटू उन की टेक ।
 पर दुख कारन दुख सहै सन असंत है एक ॥

(३८)

बिम्बा किये सिंगार है बैठी बीच बजार ॥
 बैठी बीच बजार नजारा सब से मारै ।
 बातें मीठी करै सभन की गाँठि निहारै ॥
 चोवा चंदन लाइ पहिरि के मलमल खासा ।
 पंचभतारी भई करै औरन की आसा ॥
 लेइ खसम को नाँव खसम से परिचै नाहीं ।

(१) जल में रहने वाले जीव जन्तु । (२) दूसरे जीव को सताने के निमित्त अपने जीव पर कष्ट सहते हैं ।

बेचि बड़न को नाँव सभन को ठगि ठगि खाही ॥
 पलटू तेकर बात है जेकरे एक भतार ।
 बिस्वा किये सिंगार है बैठी बीच बजार ॥

(३६)

हवा हिरिस पलटू लगी नाहक भये फकीर ॥
 नाहक भये फकीरे पीर की सेवा नाहीं ।
 अपने मुँह से बड़े कहावैं सब से जाहीं ॥
 धमधूसर होइ रहे बात में सब से लड़ते ।
 लाम काफ़^१ वो कहैं इमान को नाहीं डरते ॥
 हमहीं हैं दुखेस^२ और ना दूसर कोई ।
 सब को देहि मुराद यकीन से ओकरे होई ॥
 मन मुरीद होवै नहीं आप कहावैं पीर ।
 हवा हिरिस पलटू लगी नाहक भये फकीर ॥

(४०)

जौ लगि फाटै फिकिर ना गई फकीरी खोय ॥
 गई फकीरी खोय लगी है मान बड़ाई ।
 मोर तोर में परा नाहिं छूटी दुचिताई ॥
 दुख सुख संपति विपति सोच दोऊ की लागी ।
 जीवन की है चाह मरन की डेर नहिं त्यागी ॥
 कौड़ी जिव के संग रैन दिन करै कलपना ।
 दुष्ट^३ कहै दुख देइ मित्र को जानै अपना ॥
 पलटू चिन्ता लगी है जनम गँवाये रोय ।
 जौ लगि फाटै फिकिर ना गई फकीरी खोय ॥

॥ चितावनी ॥

(४१)

क्या सोवै तू बावरी चाला जात बसंत ॥
 चाला जात बसंत कंत ना घर में आये ।

धृग जीवन है तोर कंत बिन दिवस गँवाये ॥
 गर्ब गुमानी नारि फिरै जोवन की माती ॥
 खसम रहा है रुठि नहीं तू पठवै पाती ॥
 लगै न तेरो चित्त कंत को नाहि मनावै ॥
 का पर करै सिंगार फूल की सेज बिछावै ॥
 पलटू ऋतु भरि खेलि ले फिर पछितै है अंत ॥
 क्या सोतूवै बावरी चाला जात बसंत ॥

(४२)

खेलु सिताबी फाग तू बीती जात बहार ॥
 बीती जात बहार सम्बत लगने पर आया ॥
 लीजै डफ़ बजाय सुभग मानुष तन पाया ॥
 खेलो घूँघट खोलि लाज फागुन में नाहीं ॥
 जे कोउ करिहै लाज काज ना सपनेहुँ नाहीं ॥
 प्रेम की माट भराय सुरति की करु पिचुकारी ॥
 ज्ञान अधोर बनाय नाम की दीजै गारी ॥
 पलटू रहना है नहीं सुपना यह संसार ॥
 खेलु सिताबी फाग तू बीती जात बहार ॥

(४३)

तू क्यों गफलत में फिरै सिर पर बैठा काल ॥
 सिर पर बैठा काल दिनो दिन वादा पूजै ॥
 आज काल में कूच मुख नहिं तोकँह सूझै ॥
 कौड़ी कौड़ी जोरि ब्याज दे करते बड़ा ॥
 सुखी रहै परिवार मुक्ति में होवत उड़ा ॥
 तू जानै मैं ठग्यो आप को तुही ठगावै ॥
 नाम सजीवन मूर छोरि के माहुर खावै ॥
 पलटू सेखी ना रही चेत करो अब लाल ॥
 तू क्यों गफलत में फिरै सिर पर बैठा काल ॥

(४४)

गरमै गरमै हेलुवा गंफा लीजै मारि ॥
 गंफा लीजै मारि मनुष तन जात सिराना ।
 भजि लीजै भगवान काल सिर पर नियराना ॥
 मीठा है हरि नाम जियन का नाहिं भरोसा ।
 खाय लेहु भरि पेट आगे से जात परोसा ॥
 लीजै लाहा लूटि दिना दुइ संतन पासा ।
 अज हूँ चेत गँवार जात है खाली स्वासा ॥
 पलटू अटक न कीजिये कूच है साँझ सकारि ।
 गरमै गरमै हेलुवा गंफा लीजै मारि ॥

(४५)

सुर नर मुनि जोगी जती सभै काल बसि होय ॥
 सभै काल बसि होय मौत कालौ की होती ।
 पारब्रह्म भगवान मरै ना अबिगत जोती ॥
 जा को काल डेराय ओट ताही की लीजै ॥
 काल की कहा बसाय भक्ति जो गुरु की कीजै ॥
 जगमरन मिटि जाय सहज में ओना जाना ।
 जपि कै नाम अनाम संत जन तत्व समाना ॥
 बेद धनंतर मरि गया पलटू अमर न कोय ।
 सुर नर मुनि जोगी जती सभै काल बसि होय ॥

(४६)

चोला भया पुराना आज फटै की काल ॥
 आज फटै की काल तेहू पै है ललचाना ।
 तीनों पन गे बीत भजन का मरम ना जाना ॥
 नख सिख भये सपेद तेहू पै नाहीं चेतै ।
 जोरि जोरि धन धरै गला औरन का रेतै ॥
 अब का करिहौ यार काल ने किहा तगादा ।

चलै न एको जोर आय जब पहुँचा वादा ॥
पलटू तेहु पै लेत है माया मोह जँजाल ।
चोला भया पुराना आज फटै की काल ॥

(४७)

धूआँ का धौरेहरा ज्यों बालू की भीत ॥
ज्यों बालू की भीत ताहि को कौन भरोसा ।
ज्यों पक्का फल डारि गिरत से लगै न दोसा ।
कच्चे घड़े ज्यों नीर पानी के बीच बतासा ।
दारू^१ भीतर अगिनि जिवन की ऐसी आसा ॥
पलटू नर तन जात है घास के ऊपर सीत ।
धूआँ का धौरेहरा ज्यों बालू की भीत ॥

(४८)

यही दिदारी दार^२ है सुनहु मुसाफिर लोग ॥
सुनहु मुसाफिर लोग भेट फिर बहुरि न होना ।
को तुम को हम आय मिले सपने में सोना ॥
हिल मिल दिन दस रहे ताहि को सोच न कीजै ।
कोऊ है थिर नाहिं दोस ना हम को दीजै ॥
अहिर बाँधि के गाय एक लेहड़े में आनी ।
कूवाँ की पनिहारि गई ले घर घर पानी ॥
पलटू मछरी आम ज्यों नदी नाव संजोग ।
यही दिदारी दार है सुनहु मुसाफिर लोग ॥

(४९)

आग लगी लंका दहै उन्चासौ बही बयार ॥
उन्चासौ बही बयार ताहि को कौन बचावै ।
घर के प्राणी रहे सोऊ आगी गुहरावै ॥
फूटी घर की नारि सगा भाई अलगाना ।

बड़े मित्र जो रहे भये सब सत्रु समाना ॥
 कंचन कौ सब नगर स्ती कौ रावन तरसै ।
 दिया सिन्धु ने थाह ऊपर से पर्वत बरसै ॥
 पलटू जेहि ओर राम हैं तेहि ओर सब संसार ।
 आग लगी लंका दहै उन्चासौ बही बयार ॥

(५०)

भजन आतुरी^१ कीजिये और बात में देर ॥
 और बात में देर जगत में जीवन थोरा ।
 मानुष तन धन जात गोड़ धरि करौ निहोरा ॥
 काँचे महल के बीच पवन इक पंखी रहता ।
 दस दरवाजा खुला उड़न को नित उठि चहता ॥
 भजि लीजै भगवान एहा में भल है अपना ।
 आवागौन छुटि जाय जनम की मिटै कलपना ॥
 पलटू अटक न कीजिये चौरासी घर फेर ।
 भजन आतुरी कीजिये और बात में देर ॥

(५१)

यही समय गुरु पाँय में गोता लीजै खाय ॥
 गोता लीजै खाय नाम के सरवर^२ माहीं ।
 अवधि आइ नगिचान दाँव फिर ऐसा नाहीं ॥
 मानुष तन सकराँत महोदधि^३ जात सिरानी ।
 ऐसी परबी पाइ नहीं तुम महिमा जानी ॥
 सतसंगत के घाट पैठि कै कर असनाना ।
 तन मन दीजै दान बहुरि नहि औना जाना ॥
 पलटू बिलम न कीजिये ऐसा औसर पाय ।
 यही समय गुरु पाँय में गोता लीजै खाय ॥

(५२)

भया तगादा साहु का गया बहाना भूल ॥
 गया बहाना भूल नफा में मूर गँवाया ।
 भया साहु से भूठ बैठि के पूँजी खाया ॥
 नहीं लिहा हरि नाम करी नहिं संतन सेवा ।
 तीनों पन गये बीत पूजते देवी देवा ॥
 सारी सरहज सास धाइ के लूटि मजा री ।
 तुम्हरे सीस बिसान कोऊ ना संग तुम्हारी ॥
 पलटू मानै काल ना कठिन चलावै सूल ।
 भया तगादा साहु का गया बहाना भूल ॥

(५३)

काल महासिल^१ साहु का सिर पर पहुँचा आय ॥
 सिर पर पहुँचा आय उजुर कछु एको नाहीं ।
 पहुँचा धै अगुआय^२ लिहे धरि मारत जाही ॥
 मार परे भा चेत लगा तब करन बिचारा ।
 मूरख के परसंग बैठि कै बात बिगारा ॥
 चलै न एको जोर बहाना का को लेवै ।
 नहीं व्याज नहिं मूर साहु को का लै देवै ॥
 पलटू वादा^३ टारि गया पूँजी गई वराय^४ ।
 काल महासिल साहु का सिर पर पहुँचा आय ॥

(५४)

ज्यों ज्यो सूखै ताल है त्यों त्यों मीन मलीन ॥
 त्यों त्यों मीन मलीन जेठ में सूख्यो पानी ।
 तीनों पन गये बीति भजन का मरम न जानी ॥
 केवल गये कुम्हिलाय हंस ने किया पयाना ।

(१) तहसिल करने वाला सिपाही । (२) पहुँचा पकड़ कर आगे कर लिया जिस में भाग न सकें । (३) इकरार । (४) चुक गई ।

मीन लिया कोउ मारि ठाँव ढेला चिहराना^१ ॥
 ऐसी मानुष देह बृथा में जात अनारी ।
 भूला कौल करार आप से काम बिगारी ॥
 पलट बरस औ मास दिन पहर घड़ी पल छीन ।
 ज्यों ज्यों सुखै ताल है त्यों त्यों मीन मलीन ॥

(५५)

बूढ़ी जात जहाज है नाम निवर्तिक^२ बोल ॥
 नाम निवर्तिक बोल हाथ से तेरे जाती ।
 माँझ धार में फटी सूम की जोगवै थाती ॥
 ऐसे मूर्ख लोग लालच में जनम गँवावैं ।
 गई हाथ से चीज तेहू पर लेखा लावैं ॥
 कंठा रूधन भये मोह में लागा अजहूँ ।
 कीन्हे प्राण पयान नाम ना सुमिरे तबहूँ ॥
 पलट नर तन रतन सम भा कौड़ी के मोल ।
 बूढ़ी जात जहाज है नाम निवर्तिक बोल ॥

॥ भक्ति ॥

(५६)

एक भक्ति मैं जानौँ और भूठ सब बात ॥
 और भूठ सब बात करै हठजोग अनारी ।
 ब्रह्म दोष वो लेय काया को राखै जारी ॥
 प्राण करै आयाम कोई फिर मुद्रा साधै ।
 धोती नेती करै कोई लै स्वासा बाँधै ॥
 उनमुनि लावै ध्यान करै चौरासी आसन ।
 कोई साखी सबद कोई तप कुस कै डसन ॥
 पलट सब परपंच है करै सो फिर पछितात ।

(१) पानी के सूख जाने पर तलैया की तली फट कर मट्टी के थक्के बन जाते हैं । (२) बचाने वाला ।

एक भक्ति मैं जानों और झूठ सब बात ॥

(५७)

संत न चाहैं मुक्ति को नहीं पदारथ चार ॥

नहीं पदारथ चार मुक्ति संतन की चेरी ।

ऋद्धि सिद्धि पर थुकैं स्वर्ग की आस न हेरी ॥

तीरथ करहिं न बर्त नहीं कछु मन में इच्छा ।

पुन्य तेज परताप संत को लगै अनिच्छा ॥

ना चाहैं बैकुण्ठ न आवागवन निवार ।

सात स्वर्ग अपवर्ग तुच्छ सम ताहि विचार ॥

पलटू चाहै हरि भगति ऐसा मता हमार ।

संत न चाहैं मुक्ति को नहीं पदारथ चार ॥

(५८)

ऐसी भक्ति चलावै मची नाम की कीच ॥

मची नाम की कीच बूढ़ा औ बाला गावै ।

परदे में जो रहै सब्द सुनि रोवत आवै ॥

भक्ति करै निश्चार रहै तिर्गून से न्यारा ।

आवै देय लुटाय आपु ना करै महारा ॥

मन सब को हरि लेय सभन को राखै राजी ।

तीन देख ना सकै बैरागी पंडित काजी ॥

पलटूदास इक बानिया रहै अवध के बीच ।

ऐसी भक्ति चलावै मची नाम की कीच ॥

॥ प्रेम ॥

(५९)

मेरे तन तन लग गई पिय की मीठी बोल ॥

पिय की मीठी बोल सुनत मैं भई दिवानी ।

भँवरगुफा के बीच उठत है सोह बानी ॥

देखा पिय का रूप रूप में जाय समानी ।

जब से भया मिलाप मिले पर ना अलगानी ॥
 प्रीत पुरानी रही लिया हम ने पहिचानी ॥
 मिली जोत में जोत सुहागिन सुरत समानी ॥
 पलटू सब्द के सुनत ही घूँघट डारा खोल ॥
 मेरे तन तन लग गई पिय की मीठी बोल ॥

(६०)

पिय को खोजन मैं चली आपुइ गई हिराय ॥
 आपुइ गई हिराय कवन अब कहै सँदेसा ॥
 जेकर पिय में ध्यान भई वह पिय के भेसा ॥
 आगि माहिं जो परै सोऊ अग्नी है जावै ॥
 भृङ्गी कीट को भेंट आपु सम लेइ बनावै ॥
 सरिता बहि के गई सिन्धु में रही समाई ॥
 सिव सक्ती के मिले नहीं फिर सक्ती आई ॥
 पलटू दिवाल कहकहा^१ मत कोउ भाँकन जाय ॥
 पिय को खोजन मैं चली आपुइ गई हिराय ॥

(६१)

मगन भई मेरी माइजी जब से पाया कंथ ॥
 जब से पाया कंथ पंथ सतगुरु बतलाया ॥
 सतगुरु बड़े दयाल करी उन मो पर दाया ॥
 स्वस्ता^२ मन में आई छुटी मेरी दुचिताई ॥
 सोऊँ कंथ के साथ अंग से अंग लगाई ॥
 अभ्यन्तर^३ जागी प्रीत निरन्तर कंथ से लागी ॥
 दरस परस के करत जगत की भ्रमना भागी ॥
 पलटू सतगुरु सब्द सुनि हृदय खुला है ग्रंथ ॥

(१) एक दीवार कहानी की जिसका होना चीन देश में मशहूर है जिस पर चढ़ कर दूसरी ओर झाँकने से परिस्तान दीख पड़ता है और ऐसा हर्ष होता है कि हँसी के मारे देखने वाला बेइख्तियार होकर उधर कूद कर गायब हो जाता है।

(२) शांति । (३) अंतर में ।

मगन भई मेरी माइजी जब से पाया कंथ ॥

(६२)

आठ पहर निरखत रहै जैसे चन्द चकोर ॥

जैसे चन्द चकोर पलक से टारत नाहीं ।

चुगै बिरह से आग रहै मन चन्दै माहीं ॥

फिरै जेही दिस चंद तेही दिसि को मुख फेरै ।

चन्दा जाय छिपाय आग के भीतर हैरै ॥

मधुकर तजै न पदम जान से जाइ बंधावै^१ ।

दीपक में ज्यों पतंग प्रेम से प्रान गँवावै ॥

पलटू ऐसी प्रीत कर परधन चाहै चोर ।

आठ पहर निरखत रहै जैसे चन्द चकोर ॥

(६३)

अम्मा मेरा दिल लगा मुझ से रहा न जाय ॥

मुझ से रहा न जाय बिना साहिब को देखे ।

जान तसद्दुक^२ करौं लगै साहिब के लेखे ॥

मुझ को भया है सोग जायगा जीव हमारा ।

एकर दारू यही मिलै जो प्रीतम प्यास ॥

पड़ा प्रेम जंजाल जिकिर^३ सीने में लागी ।

मैं गिरि परी बेहोस लोक की लज्जा भागी ॥

पलटू सतगुरु बैद बिन कौन सकै समझाय ।

अम्मा मेरा दिल लगा मुझ से रहा न जाय ॥

(६४)

सीसा उतारै हाथ से सहज आसिकी नाहिं ॥

सहज आसिकी नाहिं खाँड़ खाने को ताहीं ।

(१) रात को जब कमल सम्पुट अर्थात् चन्द होते लगता है तो भँवरा जो उस पर आशक्त है उड़ कर भागता नहीं बरन उसी के भीतर बन्द हो जाता है ।

(२) न्योछावर । (३) सुमिरन ।

भूठ आसिकी करै मुलुक में जूती खाही ॥
 जीते जी मरि जाय करै ना तन की आसा ।
 आसिक को दिन रात रहै सूली पर बासा ॥
 मान बढ़ाई खोय नौंद भर नाहीं सोना ।
 तिल भर रक्त न माँस नहीं आसिक को रोना ॥
 पलटू बड़े बेकूफ वे आसिक होने जाहिं ।
 सीस उतारै हाथ से सहज आसिकी नाहिं ॥

(६५)

भूली जग की चाल सब भई जोगिनि अलमस्त ॥
 भई जोगिनि अलमस्त खबर कछु तन की नाहीं ।
 खाय पियै अब कौन रहै मन भजनै माहीं ॥
 ऐसी लागी नेह तुरिया से भई अतीता ।
 आठ पहर गलतान जोति के घर को जीता ॥
 है गइ दसा अरुढ़ ज्ञान तजि भई बिज्ञानी ।
 धरती नभ जरि गई जरा है पवन औ पानी ॥
 पलटू दिनकर उदय भा रजनी है गई अस्त ।
 भूली जग की चाल सब भई जोगिनि अलमस्त ॥

(६६)

फनि से मनि ज्यों बीछुरै जल से बिछुरै मीन ॥
 जल से बिछुरै मीन प्रान को तुरत गँवावै ।
 रहै न कोटि उपाय दूध के भीतर नावै ॥
 ऐसी करै जो प्रीति ताहि की प्रीति सराही ।
 बिछुरे पर नर जियै प्रीति वाहू की नाहीं ॥
 पटक पटक तन रहै बिछोहा सहा न जाई ।
 नैन ओट जब भये प्रान को संग पठाई ॥
 पलटू हरि से बीछुरे ये ना जीवैं तीन ।
 फनि से मनि जो बीछुरे जल से बिछुरै मीन ॥

(६७)

प्रेम बान जा के लगा सो जानैगा पीर ॥
 सो जानैगा पीर काह मूरख से कहिये ।
 तिल भरि लगै न ज्ञान ताहि से चुप है रहिये ॥
 लाख कहै समुझाय बचन मूरख नहि मानै ।
 तासे कहा बसाय ठान जो अपनी ठानै ॥
 जेहि के जगत पियार ताहि से भक्ति न आवै ।
 सतसंगति से बिमुख और के सन्मुख धावै ॥
 जिन कर हिया कठोर है पलटू धसे न तीर ।
 प्रेम बान जा के लगा सो जानैगा पीर ॥

(६८)

अपने पिय की सुन्दरी लोग कहैं बौरान ॥
 लोग कहैं बौरान काहि की पकरौं बानी ।
 घर घर घोर मथान फिरौं मैं नाम दिवानी ॥
 घूँघट डारेउँ खोलि ज्ञान के ढोल बजाई ।
 चढ़िउँ बाँस पर धाड़ सहर के बिचै गड़ाई ॥
 देखि देखि सब चिढ़ै लोग मैं अधिक चिढ़ावौं ।
 लगी गुरु से डोरि मगन है ताहि रिझावौं ॥
 पलटू हमरे देस की जानैं संत सुजान ।
 अपने पिय की सुन्दरी लोग कहैं बौरान ॥

(६९)

सतगुरु सब्द के सुनत ही तन की सुधि रहि जात ॥
 तन की सुधि रहि जात जाय मन अंतै अटका ।
 बिसरी भूख पियास किया सतगुरु ने टोटका^१ ॥
 दतुइन करी न जाय नहीं अब जाय नहाई ।
 बैठा उठा न जाय फिरी अब नाम दुहाई ॥

कौन बनावै भेष कौन अब टोपी देवै ।
 बिसरा माला तिलक कौन अब दर्पन लेवै ॥
 पलटू मुका है आपु को मुख से भली बात ।
 सतगुरु सब्द के सुनत ही तन की सुधि रहि जात ॥

(७०)

की तौ इक ठौरै रहै की दुइ में इक मरि जाय ॥
 दुइ में इक मरि जाय रहत है दुविधा लागी ॥
 सुचित नहीं दिन रात उठत बिरहा की आगी ॥
 तुम जीवो भगवान मरन है मेरो नीका ।
 तुम बिन जीवन धिक्क लगै कारिख को टीका ॥
 की तुम आवो इहाँ लेव की प्राण अपाना ।
 दोऊ को दुख होय हस जोड़ी अलगाना ॥
 कह पलटू स्वामी सुनो चिन्ता सही न जाय ।
 की तौ इक ठौरै रहै की दुइ में इक मरि जाय ॥

(७१)

यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहिं ॥
 खाला का घर नाहिं सीस जब धरै उतारी ।
 हाथ पाँव कटि जाय करै ना संत करारी ॥
 ज्यों ज्यों लागे घाव तेहूँ तेहूँ कदम चलावै ।
 सुग रन पर जाय बहुरि ना जियता आवै ॥
 पलटू ऐसे घर मैंहैं बड़े मरद जे जाहिं ।
 यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहिं ॥

(७२)

आसिक का घर दूर है पहुँचै बिरला कोय ॥
 पहुँचै बिरला कोय होय जो पूरा जोगी ।
 बिंद^२ करै जो छार नाद के घर में भोगी ॥

(१) ठहराव, रोक । (२) काम को जला कर खाक कर डाले ।

जीते जी मरि जाय मुए पर फिर उठि जागौ ।
 ऐसा जो कोई होइ सोई इन बातन लागौ ॥
 पुरजे पुरजे उदै अन्न बिनु बस्तर पानी ।
 ऐसे पर ठहराय सोई महबूब^१ बखानी ॥
 पलटू आपु लुटावही काला मुंह जब होय ।
 आसिक का घर दूर है पहुँचै बिरला कोय ॥

(७३)

जहाँ तनिक जल बीछुडै छोड़ि देतु है प्रान ॥
 छोड़ि देतु है प्रान जहाँ जल से बिलगावै ।
 देइ दूध में डारि रहै ना प्रान गँवावै ॥
 जा को वही अहार ताहि को का लै दीजै ।
 रहै ना कोटि उपाय और सुख नाना कीजै ॥
 यह लीजै दृष्टान्त सकै सो लेइ बिचारी ।
 ऐसो करै सनह ताहि की मैं बलिहारी ॥
 पलटू ऐसी प्रीति करु जल और मीन समान ।
 जहाँ तनिक जल बीछुडै छोड़ि देतु है प्रान ॥

(७४)

जो मैं हारौं राम की जो जीतौं तौ राम ॥
 जो जीतौं तौ राम राम से तन मन लावौं ।
 खेलौं ऐसो खेल लोक की लाज बहावौं ॥
 पासा फेंकौं ज्ञान नरद बिस्वास चलावौं ।
 चौरासी घर फिरै अड़ी पौबारह नावौं ॥
 पौबारह सिखाय एक घर भीतर राखौं ।
 कच्ची मारौं पाँच रैनि दिन सत्रह भाखौं ॥
 पलटू बाजी लाइहौं दोऊ बिधि से राम ।
 जो मैं हारौं राम की जो जीतौं तौ राम ॥

॥ विस्वास ॥

(७५)

लगन महूरत भूठ सब और बिगाड़ै काम ॥
 और बिगाड़ै काम साइत जनि सोधै कोई ।
 एक भरोसा नाहिं कुसल कहवाँ से होई ॥
 जेकरे हाथै कुसल ताहि को दिया बिसारी ।
 आपन इक चतुराई बीच में करै अनारी ॥
 तिनका टूटै नाहिं बिना सतगुरु की दाया ।
 अजहूँ चेत गँवार जगत है भूठी काया ॥
 • पलटू सुभ दिन सुभ घड़ी याद पड़े जब नाम ।
 • लगन महूरत भूठ सब और बिगाड़ै काम ॥

(७६)

मोर राम मैं राम का ता से रहौ निसंक ॥
 ता से रहौ निसंक तनिक मोर बार ना बाँकै ।
 जो कोइ मानै बैर हारि के आपुइ थाकै ॥
 दोऊ^१ बिधि से राम भार उनके सिर दीन्हा ।
 मो पर परै जो गाढ़ राम आपुइ पर लीन्हा ॥
 राम भरोसा पाय डेरों काहू से नाहों ।
 फूल में है ज्यों बास राम हैं हमहीं माहीं ॥
 • पलटू सब में राम है क्या राजा क्या रंक ।
 • मोर राम मैं राम का ता से रहौ निसंक ॥

(७७)

मगन आपने ख्याल में भाड़ परै संसार ॥
 भाड़ परै संसार नाहिं काहू से कामा ।
 मन बच करम लगाय जानिहौ केवल रामा ॥
 लोक लाज कुल त्यागि जगत की बूझ बड़ाई^२ ।

(१) परमार्थ और स्वार्थ दोनों में । (२) दुनिया की बूझ और बड़ाई की हैसियत ।

निंदा कोउ कै जाय रहौ संतन सरनाई ॥
 छोड़ौ दिन दिन संग सुनौ ना बेद पुराना ।
 ठान आपनी ठानि आन ना करिहौ काना ॥
 पलटू संसै छूटि गई मिलिया पूरा यार ।
 मगन आपने ख्याल में भाड़ परै संसार ॥

॥ सतसंग ॥

(७८)

जो कोउ चाहै अभय पद जाइ करै सतसंग ॥
 जाइ करै सतसंग प्रान बैराग उठावै ।
 स्रवन करै बेदान्त मनन करि मन समुझावै ॥
 तब साधै हठ जोग बिपर्जय^१ कौ घर पावै ।
 प्रान करै आयाम पुरुष तब नजरि में आवै ॥
 देखै अपनो रूप होय तब ज्ञान समाधी ।
 तब दे साधन छोड़ि लेइ जब पहिले साधी ॥
 पलटू खोवै आपु को तब लागैगा रंग ।
 जो कोउ चाहै अभय पद जाइ करै सतसंग ॥

(७९)

बैरागिनि भूली आप में जल में खोजै राम ॥
 जल में खोजै राम जाय के तीरथ खानै ।
 भरमै चारिउ खूंट नहीं सुधि अपनी आनै ॥
 फूल माहिं ज्यों बास काठ में अगिन छिपानी ।
 खोदे बिनु नहिं मिलै अहै धरती में पानी ॥
 जैसे दूध घृत छिपा छिपी मिहँदी में लाली ।
 ऐसे पूरन ब्रह्म कहूँ तिल भरि नहिं खाली ॥
 पलटू सतसंग बीच में करि ले अपना काम ।
 बैरागिनि भूली आप में जल में खोजै राम ॥

(८०)

मलया के परसंग से सीतल होवत साँप ॥
 सीतल होवत साँप ताप को तुरत बुभाई ।
 संगत के परभाव सीतलता वा में आई ॥
 मूरख ज्ञानी होय जाय ज्ञानी में बैठे ।
 फूल अलग का अलग बासना तिल में पैठे ॥
 कंचन लोहा होय जहाँ पारस छुड़ जाई ।
 पनपे उकठा^१ काठ जहाँ उन सरदी पाई ॥
 पलटू संगत किये से मिटते तीनिउँ ताप ।
 मलया के परसंग से सीतल होवत साँप ॥

(८१)

पारस के परसंग से लोहा महँग बिकान ॥
 लोहा महँग बिकान छुए से कीमत निकरी ।
 चंदन के परसंग चंदन भई बन की लकरी ॥
 जैसे तिल का तेल फूल संग महँग बिकाई ।
 सतसंगति में पड़ा संत भा सदन कसाई ॥
 गंग में है सुभगंग मिली जो नारा सोती ।
 सीप बीच जो पड़े बूँद सो होवै मोती ॥
 पलटू हरि के नाम से गनिका चढ़ी विमान ।
 पारस के परसंग से लोहा महँग बिकान ॥

(८२)

फिर फिर नहीं दिवारी दियना लीजै बार ॥
 दियना लीजै बार महल में है उँजियारा ।
 उदय होय ससि भान अभावस मिटै अँधियारा ॥
 ज्ञान होय परगास कुमति जूआ में हारै ।
 दुतिया^२ खंडन करै एक को बैठि बिचारै ॥

रचि रचि तीसौ सखी अभूषन प्रेम बनाई ।
गोबरधन मन पूजि बहुरि सब घर को आई ॥
पलटू सतसंगत मिला खेलि लेहु दिन चार ॥
फिर फिर नहीं दिवारी दियना लोजै बार ॥

(८३)

जंगल जंगल मैं फिरों घर में रहै सिकार ॥
घर में रहै सिकार भेद ना कोउ बतावै ।
गया अहेरी भूलि कहाँ से सावज^१ पावै ॥
खोजा चारिउ खँट कहीं कुछ नजर न आवै ।
कतहूँ ना सुधि आई नहीं कोउ भेद बतावै ॥
जप तप तीरथ बरत किया बहु नेम अचारा ।
खोजा वेद पुरान सबै सतसंग पुकारा ॥
सतगुरु किया इसारा पलटू लीन्हा मार ॥
जंगल जंगल मैं फिरों घर में रहै सिकार ॥

(८४)

बिन खाये चित चैन नहिं खाये आलस होय ॥
खाये आलस होय कहो कैसी बिधि कीजै ।
दोऊ बिधि से बिपति दोस का को हम दीजै ॥
मन बैरी है बड़ा कहे में अपने नाहीं ।
पुन्र में करता पाप पाप में पुन्र कराहीं ॥
सुभ आसुभ के बीच पड़ा है जीव बिचारा ।
दोऊ में वह मिला बात सब वही बिगारा ॥
पलटू सतसंगत दोऊ छुटै करै जो कोय ।
बिन खाये चित चैन नहिं खाये आलस होय ॥

(८५)

जो जो गा सतसंग में सो सो बिगार^२ जाय ॥

(१) शिकार । (२) इस कुंडलिया में बिगड़ने का शब्द व्यंग से सुधरने के अर्थ में कहा है ।

सो सो बिगरा जाय फूल सँग तेल बसाना ।
 ज्ञानी के संग परा ज्ञान मूरख ने जाना ॥
 पारस के परसंग बिगरि गा लोहा जाई ।
 लोहा से भा कनक आपनी जाति गँवाई ॥
 सलिता गइ है बिगरि मिली गंगा में जाई ।
 मलया के परसंग काठ चन्दन कहवाई ॥
 पलटू काग से हंस भा और काग पछिताई ।
 जो जो गा सतसंग में सो सो बिगरा जाई ॥

(८६)

पलटू मेरी बनि परी मुद्दा^१ हुआ तमाम ॥
 मुद्दा हुआ तमाम परे सतसंगति माहीं ।
 निस दिन तौलै पूर घाट^२ अब सुपनेहु नाहीं ॥
 पूँजी पाई साच दिनों दिन होती बढ़ती ।
 सतगुरु के परताप भई है दौलत चढ़ती ॥
 कोठी दसवें द्वार^३ सहज की खेप चलावो ।
 कोई न टोकनहार नफा घर बैठे पावो ॥
 दूनों पाँव पसारि कै निस दिन करो अराम ।
 पलटू मेरी बनि परी मुद्दा हुआ तमाम ॥

॥ सतसंग अनधिकारी को ॥

(८७)

सतगुरु सब को देत हैं लेता नाहीं कोय ॥
 लेता नाहीं कोय सीस को धरै उतारी ।
 वही सकस^४ को मिलै मरै की करै तयारी ॥
 कड़ू बहुत सतनाम देखत कै डेरै सरीरा ।
 रोटी खावनहार खायगा क्योंकर हीरा ॥
 अंधा होवै नीक बैद का पथ जो खावै ।

मलयागिर की बास बाँस में नहीं समावै ॥
पलटू पारस क्या करै जो लोहा खोटा होय ।
सतगुरु सब को देत हैं लेता नहीं कोय ॥

॥ शब्द ॥

(५८)

सबद छुड़ावै राज को सबदै करै फकीर ॥
सबदै करै फकीर सबद फिर राम मिलावै ।
जिन के लागा सबद तिन्हें कछु और न भावै ॥
मरे सबद की घाव उन्हें को सकै जियाई ।
होइ गा उनका काम परी रोवै दुनियाई ॥
घायल भा वह फिरै सबद कै चोट है भारी ।
जियतै मिरतक होय झुकै फिर उठै सँभारी ॥
पलटू जिन के सबद का लगा कलेजे तीर ।
सबद छुड़ावै राज को सबदै करै फकीर ॥

(५९)

सुरत सब्द के मिलन में मुझ को भया अनंद ॥
मुझ को भया अनंद मिला पानी में पानी ।
दोऊ से भा सूत नहीं मिलि कै अलगानी ॥
मुलुक भया सलतन्त^१ मिला हाकिम को राजा ।
रैयत करै अराम खोलि के दस दरवाजा^२ ॥
छूटी सकल बियाधि मिटी इंद्रिन की दुतिया ।
को अब करै उपाधि चोर से मिलि गइ कुतिया ॥
पलटू सतगुरु साहिब काटौ मेरी बंद ।
सुरत सब्द के मिलन में मुझ को भया अनंद ॥

(६०)

जोग जुगत आसन नहीं साधन नहीं बिबेक ॥

साधन नहीं बिबेक साधन सब कै कै छूटा ।
 लागी सहज समाधि सब्द ब्रह्मांड में फूटा ॥
 खंडन तनिक न होय तेलवत^१ लागी धारा ।
 जोति निरन्तर बरै दसो दिसि भा उजियारा ॥
 ज्ञान ध्यान सब छूटि छूटि संजम चतुराई ।
 तन की सुधि गइ बिसरि अरूढ़^२ अवस्था आई ॥
 पलटू में भजनै भया रही न दूजी रेख ।
 जोग जुगत आसन नहीं साधन नहीं बिबेक ॥

॥ ध्यान ॥

(६१)

कमठ दृष्टि जो लावई सो ध्यानी परमान ॥
 सो ध्यानी परमान सुरति से अंडा सेवै ।
 आप रहै जल माहिं सूखे में अंडा देवै ॥
 जस पनिहारी कलस भरे मारग में आवै ।
 कर छोड़े मुख बचन चित्त कलसा में लावै ॥
 फनि मनि धरै उतारि आपु चरने को जावै ।
 वह गाफिल ना परै सुरति मनि माहिं रहावै ॥
 पलटू सब कारज करै सुरति रहै अलगान ।
 कमठ दृष्टि जो लावई सो ध्यानी परमान ॥

(६२)

जैसे कामिनि के विषय कामी लावै ध्यान ॥
 कामी लावै ध्यान रैन दिन चित्त न धरै ।
 तन मन धन मर्जाद कामिनि के ऊपर वारै ॥
 लाख कोऊ जो कहै कहा ना तनिकौ मानै ।
 बिन देखे ना रहै वाहि को सर्वस जानै ॥
 लेय वाहि को नाम वाहि की करै बड़ाई ।

(१) तेल के समान । (२) ऊँची ।

तनिक बिसारै नाहिं कनक ज्यों किरपन^१ पाई ॥
ऐसी प्रीति अब दीजिये पलटू को भगवान ॥
जैसे कामिनि के बिषय कामी लावै ध्यान ॥

॥ घट मठ ॥

(६३)

साहिब साहिब क्या करै साहिब तेरे पास ॥
साहिब तेरे पास याद करु होवै हाजिर ॥
अंदर धसि कै देखु मिलेगा साहिब नादिर ॥
मान मनी हो फना^२ नूर तब नजर में आवै ॥
बुरका^३ डारै टारि खुदा बाखुद^४ दिखरावै ॥
रूह करै मेराज^५ कुफर का खोलि कुलाबा^६ ॥
तीसौ रोजा रहै अंदर में सात रिकाबा^७ ॥
लामकान में रूब को पावै पलटूदास ॥
साहिब साहिब क्या करै साहिब तेरे पास ॥

(६४)

दिल में आवै है नजर उस मालिक का नूर ॥
उस मालिक का नूर कहाँ को ढूँढन जावै ॥
सब में पूर समान दरस घर बैठे पावै ॥
धरती नभ जल पवन तेही का सकल पसारा ॥
छुटै भ्रम की गाँठि सकल घट ठाकुरद्वारा ॥
तिल भरि नाहिं कहीं जहाँ नहिं सिरजनहारा ॥
वोही आवै नजर फुरा^८ बिस्वास हमारा ॥
पलटू नेरे साच के भूटे से है दूर ॥
दिल में आवै है नजर उस मालिक का नूर ॥

(६५)

खोजत खोजत मरि गये घर ही लागा रंग ॥

(१) कंजूस । (२) नष्ट । (३) घूँघट । (४) अपने में । (५) चढ़ाई । (६) जंजीर, सिकरी । (७) पद, स्थान । (८) सच्चा ।

घर ही लागा रंग कीन्ह जब संतन दाया ।
 मन में भा बिस्वास छूटि गइ सहजै माया ॥
 वस्तु जो रही हिरान ताहि का लगा ठिकाना ।
 अब चित चलै न इत उत आपु में आपु समाना ॥
 उठती लहर तरंग हृदय में सीतल लागे ।
 भरम गई है सोय बैठि कै चेतन जागे ॥
 पलटू खातिर जमा भई सतगुरु के परसंग ।
 खोजत खोजत मरि गये घर ही लागा रंग ॥

(६६)

नजर मँहै सब की पड़ै कोऊ देखै नाहिं ॥
 कोऊ देखै नाहिं सीस पै सब के छाजै ।
 पूरन ब्रह्म अखंड सकल घट आपु बिराजै ॥
 दिवसै फिरै भुलान रहै तिरगुन मह माता ।
 देखि देखि दै छाड़ि पंडित पहुँ^१ पूजन जाता ॥
 भूला सब संसार भेद नहिं जानै वा की ।
 देखत है इक संत ज्ञान की दीठी^२ जा की ॥
 पलटू खाली कहुँ नहिं परगट है जग माहिं ।
 नजर मँहै सब की पड़ै कोऊ देखै नाहिं ॥

॥ दास ॥

(६७)

पहिले दासातन करै सो बैराग प्रमान^३ ॥
 सो बैराग प्रमान सेवा साधुन की कीजै ।
 तब छोड़ै संसार बूझ घरही में लीजै ॥
 काढ़ै रस रस गोड़^४ कछुक दिन फिरै उदासी ।
 सतगुरु उहवाँ बसैं जहाँ काया की कासी ॥
 आसन से दृढ़ होय घटावै नौद अहारा ।

(१) पास । (२) दृष्टि, निगाह । (३) मानने योग्य । (४) धीरे-धीरे कदम बढ़ावै ।

काम क्रोध को मारि तत्व का करै बिचारा ॥
भक्ति जोग के पीछे पलटू उपजै ज्ञान ।
पहिले दासातन करै सो बैराग प्रमान ॥

(६८)

का जानी केहि औसर साहिब ताकै मोर ।
साहिब ताकै मोर मिहर की नजरि निहारै ॥
तुरत पदम-पद देइ औगुन को नाहि बिचारै ॥
राम गरीबनिवाज गरीबन सदा निवाजा ।
भक्त-बछल^१ भगवान करत भक्तन के काजा ॥
गाफिल नाहीं परै साच है लौ जब लावै ।
परा रहै वहि द्वार धनी कै धक्का खावै ॥
आठ पहर चौंसठ घरी पलटू परै न भोर^२ ।
का जानी केहि औसर साहिब ताकै मोर ॥

(६९)

खामिंद कब गोहरावै चाकर रहै हजूर ॥
चाकर रहै हजूर होइ ना निमक-हरामी ।
डेरत रहै दिन राति लगै ना कबहीं खामी^३ ॥
आठ पहर रहै ठाढ़ सोई है चाकर पूरा ।
का जानी केहि घरी हरी दै देइ अजूर^४ ॥
निवाले रोह बरोह सलाम में रहता चोटा^५ ।
वह काफिर बेपीर खायगा आखिर सोटा ॥
पलटू पलक न भूलिये इतना काम जरूर ।
खामिंद कब गोहरावै चाकर रहै हजूर ॥

(१) भक्त वत्सल = भक्त को प्यार करने वाला । (२) भूल । (३) कचाई, चूक ।

(४) मिहमताना, इनाम । (५) खाना (निवाला) मिलने के वक्त तो हाजिर (रोह ब रोह = खबरू) और सलाम यानी काम के वक्त गायब (चोटा = चोर) ।

॥ सुरमा ॥

(१००)

संत चढ़े मैदान पर तरकस बाँधे ज्ञान ॥
 तरकस बाँधे ज्ञान मोह दल मारि हटाई ।
 मारि पाँच पचोस दिहा गढ़ आगि लगाई ॥
 काम क्रोध को मारि कैद में मन को कीन्हा ।
 नव दरवाजे छोड़ि सुरत दसएँ पर दीन्हा ॥
 अनहद बाजै तूर अटल सिंहासन पाया ।
 जीव भया संतोष आय गुरु नाम लखाया ॥
 पलटू कफ़न बाँधि के खेंचो सुरति कमान ।
 संत चढ़े मैदान पर तरकस बाँधे ज्ञान ॥

(१०१)

बाना बाँधे लड़ि मरै संत सिपाहि क पूत ॥
 संत सिपाहि क पूत इसिम^१ में दाग न लागै ।
 महा मोह दल टारि बहुरि ना पानी माँगै ॥
 मारै पाँच पचोस बचै ना तिरगुन पावै ।
 लालच का सिर काटि मुलुक में अदल चलावै ॥
 तृस्ना और हङ्कार माया की गर्दन मारै ।
 मन को लेवै पकरि कैद करि बेरी डारै ॥
 पलटू टरै न खेत से सोई है अवधूत^२ ।
 बाना बाँधे लड़ि मरै संत सिपाही क पूत ॥

(१०२)

काया कोट छुड़ावै सोई है रजपूत ॥
 सोई है रजपूत देइ गढ़ आगि लगाई ।
 मुरचा पाँच पचोस बात में लेइ छुड़ाई ॥
 काया गढ़ के बीच जाय के थाना करना ।
 मन है बड़ा मवास^३ पकरि के ठौर मरना ॥

काम क्रोध को मारि लोभ औ मोह हंकारा ।
लालच का सिर काटि बहै लोहू की धारा ॥
पलटू अठएँ लोक में अमल करै अवधूत ।
काया कोट छुड़ावै सोई है रजपूत ॥

(१०३)

संत चढ़े जो मोह^१ पर काया नगर मँझार ॥
काया नगर मँझार ज्ञान का तरकस बाँधे ।
दम की गोली साधि विस्वास बन्दूक है काँधे ॥
घोड़ा है संतोष छिमा का जीन बँधाई ।
बखतर पहिरे प्रेम गगन में लै दौड़ाई ॥
मुरचा पाँच पचीस बात में लिहा छुड़ाई ।
मन के बेरी^२ डारि नगर में अदल चलाई ॥
पलटू सुरति कमान करि नाम निसाना मार ।
संत चढ़े जो मोह पर काया नगर मँझार ॥

(१०४)

लागी गोली नाम की पलटू गया है लोट ॥
पलटू गया है लोट चोट सबदन की लागी ।
रंजक दै कै ज्ञान दिया संतन ने दागी ॥
लोथ परी भहराय उठत हैं गिद्ध मसाना ।
भागे कादर^३ देखि खेत सूरा ठहराना ॥
मारै भरि भरि भेद छेद भा तन में तिल तिल ।
कड़खा^४ दै ललकार खाल गिरि परी है छिल छिल ।
सतगुरु के मैदान में रही न तनिकौ ओट ।
लागी गोली नाम की पलटू गया है लोट ॥

(१) मोह दल पर चढ़ाई को । (२) बेड़ी । (३) कायर । (४) शूरता की महिमा

के शब्द ।

(१०५)

लागी गाँसी सबद की पलटू मुआ तुरन्त ॥
 पलटू मुआ तुरन्त खेत के ऊपर जाई ।
 सिर पहिले उड़ि गया रुंड^१ से करै लड़ाई ॥
 तन में तिल तिल घाव परदा खुलि लटकत जाई ।^२
 हैफ^३ खाइ सब लोग लड़ै यह कठिन लड़ाई ॥
 सतगुरु मारा तीर बीच छाती में मेरी ।
 तीर चला होइ पवन निकरि गा तारू फोरी ॥
 कहनेवाले बहुत हैं कथनी कथें बेअंत ।
 लागी गाँसी सबद की पलटू मुआ तुरन्त ॥

(१०६)

जियतै मरना भला है नाहिं भला बैराग ॥
 नाहिं भला बैराग अस्त्र बिन करै लड़ाई ।
 आठ पहर की मार चूके से और न पाई ॥
 रहै खेत पर गढ़ सीस को लेय उतारी ।
 दिन दिन आगे चलै गया जो फिरै पछारी ॥
 पानी माँगै नाहिं नाहिं काहू से बोलै ।
 छकै पियाला प्रेम गगन की खिड़की खोलै ॥
 पलटू खरी कसौटी चढ़ै दाग पर दाग ।
 जियतै मरना भला है नाहिं भला बैराग ॥

॥ पतिव्रता ॥

(१०७)

परिवरता को लच्छन सब से रहै अधीन ॥
 सब से रहै अधीन टहल वह सब की करती ।
 सास ससुर और भसुर ननद देवर से डेरती ॥

(१) धड़ । (२) आँतें निकल कर लटक रही हैं । (३) अफसोस या
 अचरज करै ।

सब का पोषन करै सभन की सेज बिछावै ।
 सब को लेय सुताय, पास तब पिय के जावै ॥
 सुतै पिय के पास सभन को राखै राजी ।
 ऐसा भक्त जो होय ताहि की जीती बाजी ॥
 पलटू बोलै मीठे बचन भजन में है लौलीन ।
 पतिबरता को लच्छन सब से रहै अधीन ॥

(१०८)

सोई सती सराहिये जरै पिया के साथ ॥
 जरै पिया के साथ सोई है नारि सयानी ।
 रहै चरन चित लाय एक से और न जानी ॥
 जगत करै उपहास पिया का संग न छोड़ै ।
 प्रेम की सेज बिछाय मेहर की चादर ओढ़ै ॥
 ऐसी रहनी रहै तजै जो भोग बिलासा ।
 मारै भूख पियास याद संग चलती स्वासा ॥
 रैन दिवस बेहोस पिया के रँग में राती ।
 तन की सुधि है नहीं पिया संग बोलत जाती ॥
 पलटू गुरु परसाद से किया पिया को हाथ^१ ।
 सोई सती सराहिये जरै पिया के साथ ॥

॥ उपदेश ॥

(१०९)

हरि को दास कहाय के गुनह करै ना कोय ॥
 गुनह करै ना कोय जेहि बिधि राखै रहिये ।
 दुख सुख कैसउ पड़े केहू से तनिक न कहिये ॥
 तेरे मन में और करनवाला है औरै ।
 तू ना करै खराब नाहक को निस दिन दौरै ॥
 वा को कीजै याद जाहि की मारी टूटै ।

आधी को तू जाय घरहि में सम्मै^१ फूटै ॥
 पलटू गुनह कियै से भजन माहिं भंग होय ।
 हरि को दास कहाय के गुनह करै ना कोय ॥

(११०)

अपनी ओर निभाइये हारि परै की जीति ॥
 हारि परै की जीति ताहि की लाज न कीजै ।
 कोटिन बहै बयारि कदम आगे को दीजै ॥
 तिल तिल लागै घाव खेत से टरना नाहीं ।
 गिरि गिरि उठै सम्हारि सोई है मरद सिपाही ॥
 लरि लीजै भरि पेट कानि^२ कुल अपनि न लावै ।
 उन की उनके हाथ बड़न से सब बनि आवै ॥
 पलटू सतगुरु नाम से साची कीजै प्रीति ।
 अपनी ओर निभाइये हारि परै की जीति ॥

(१११)

काजर दिहे से का भया ताकन को ढब नाहिं ॥
 ताकन को ढब नाहिं ताकन की गति है न्यारी ।
 इक टक लेवै ताकि सोई है पिय की प्यारी ॥
 ताकै नैन मिरोरि नहीं चित अंतै टारै ।
 बिन ताकै केहि काम लाख कोउ नैन सँवारै ॥
 ताके में है फेर फेर काजर में नाहीं ।
 भंगि^३ मिली जो नाहिं नफा क्या जोग के माहीं ॥
 पलटू सनकारत^४ रहा पिय को खिन खिन माहिं ।
 काजर दिहे से का भया ताकन को ढब नाहिं ॥

(११२)

जाकी जैसी भावना तासे तस ब्यौहार ॥
 तासे तस ब्यौहार परसपर दूनों तारी^५ ।

(१) सबही । (२) लाज । (३) युक्ति । (४) इशारा करना । (५) दोनों ताली-
 या हथेली साथ बजती हैं ।

जो जेहि लाइक होय सोई तस ज्ञान बिचारी ॥
 जो कोइ डारै फूल ताहि को फूल तयारी ।
 जो कोइ गारी देत ताहि को हाजिर गारी ॥
 जो कोइ अस्तुति करै आपनी अस्तुति पावै ।
 जो कोइ निन्दा करै ताहि के आगे आवै ॥
 पलटू जस मैं पीव का बैसे पीव हमार ।
 जाकी जैसी भावना तासै तस व्योहार ॥

(११३)

देढ़ सोफ़ मुँह आपना ऐना देढ़ा नाहिं ॥
 ऐना देढ़ा नाहिं देढ़ को देढ़े सूफ़े ।
 जो कोइ देखै सोफ़ ताहि को सोफ़े बूफ़े ॥
 जाको कुछ नाहिं भेद भावना अपनी दरसै ।
 जाको जैसी प्रीति मुरति सो तैसी परसै ॥
 दुर्जन के दुर्बुद्धि पाप से अपने जरते ।
 सज्जन के है सुमति सुमति से अपने तरते ॥
 पलटू ऐना संत हैं सब देखै तेहि माहिं ।
 देढ़ सोफ़ मुँह आपना ऐना देढ़ा नाहिं ।

(११४)

फूली है यह केतकी भौरा लीजै बास ॥
 भौरा लीजै बास जन्म मानुष को पाया ।
 करी न गुरु की भक्ति जक्त में आइ भुलाया ॥
 भौरा कीजै चेत कहा तू फिरै भुलाना ।
 हरि को नाम सुगन्ध छोड़ि पाइर^१ लिपटाना ॥
 ऋतु बसंत की जात कली को रस लै लीजै ।
 बहुरि न ऐसो दाँव चेत चित भौरा कीजै ॥

पलटू कबहूँ ना मरै होय न जिव का नास ।
फूली है यह केतकी भौरा लीजै बास ॥

(११५)

गुरु की भक्ति और माया ज्यों छूरी तरबूज ॥
ज्यों छूरी तरबूज कुसल दोऊ बिधि नाहीं ।
गिरे गिराये घाव लगे तरबूजै माहीं ॥
कनक कामिनी बड़ी दोऊ है तीछन^१ धारा ।
तब बचिहै तरबूज रहै छूरी से न्यारा ॥
छोट बड़ा कतलाम नहीं छूरी को दाया ।^२
बचे बिबेकी संत गये जिन अंग लगाया ॥
पलटू उन से बैर है पड़ै न मूरख बूझ ।
गुरु की भक्ति और माया ज्यों छूरी तरबूज ॥

(११६)

पलटू जो सिर ना नवै बिहतर कद होय ॥
बिहतर कद होय संत से नइ^३ कै चलिये ।
जुरै सो आगे धरै गोड़ धै सेवा करिये ॥
आपन जीवन जनम सुफल कै वह दिन जानै ।
देखत नैन जुड़ाय सीतलता मन में आनै ॥
अंतर नाहीं करै मन बच^४ से लावै सेवा ।
ब्रह्मा बिस्तु महेस संत हैं तीनों देवा ॥
सीस नवावै संत को सीस बखानौ सोइ ।
पलटू जो सिर ना नवै बिहतर कद होय ॥

(११७)

राम कृष्ण परसराम ने मरना किया कबूल ॥
मरना किया कबूल मरै से बचै न कोई ।

(१) तेज । (२) धुरी निर्दईपने से सब छोट बड़े का कतल या खून करती है ।

(३) झुक कर । (४) बचन ।

दसचौदह^१ औतार काल के बसि में होई ॥
 सुर नर मुनि सब देव मुए सब मौत अपनायी ॥
 देव पितर ससि भानु पवन नभ धरती पानी ॥
 राजा रंक फकीर सुर और बीर करारी ॥
 साधु सती औ अग्निन मुए जिन सब को जारी ॥
 पलटू आगे मरि रहौ आखिर मरना मूल । °
 राम कृष्ण परसराम ने मरना किया कबूल ॥ °

(११८)

समुझावै सो भी मरै पलटू को पछिताय ॥
 पलटू को मछिताय दिना दस सबै मुसाफिर ।
 हिलि मिलि रहैं सराय भोर भये पंथ पड़ा सिर ॥
 इक आवै इक जाय रहै ना पैड़ा खाली ।
 इक ओर काटी जाय दूसरा लावै माली ॥
 बूढ़ा बारा ज्वान नहीं है कोई इस्थिर ।
 सबै बटाऊ लोग काहे को पचिये मरि मरि ॥
 मरने वाला मरि गया रोवै सो मरि जाय ।
 समुझावै सो भी मरै पलटू को पछिताय ॥

(११९)

तुम्हे पराई क्या परी अपनी ओर निबेर ॥
 अपनी ओर निबेर छोड़ि गुड़ बिष को खावै ।
 कूवाँ में तू परै और को राह बतावै ॥
 औरन को उँजियार मसालची जाइ अंधेरे ।
 त्यों ज्ञानी की बात मया से रहते घेरे ॥^२
 बेचत फिरै कपूर आप तो खारी खावै ।
 घर में लागी आग दौरि के घूर बुतावै ॥

(१) औतारों की संख्या चौबीस है । (२) माया में डूबा है और मुँह से ज्ञान कथता है ।

पलटू यह साची कहै अपने मन का फेर ।
तुम्हें पराई क्या परी अपनी ओर निबेर ॥

(१२०)

बहता पानी जात है धोउ सिताबी^१ हाथ ॥
धोउ सिताबी हाथ करौ कछु नीकी करनी ।
बीस-सात^२ है नरक मिली अठएँ^३ बैतरनी ॥
तोहि से परिहि सो बयरा^४ जम धिकवै भाथी ।
• स्वारथ के सब लोग औसर के कोऊ न साथी ॥
• आगे बूझि बिचारि करौ डेर वहि दिन केरी ।
संत सभा में बैठु परै नहिं जम की बेरी^५ ॥
पलटू हरि जस गाइले येही तुम्हरे साथ ।
बहता पानी जात है धोउ सिताबी हाथ ॥

(१२१)

जिन जिन पाया बस्तु को तिन तिन चले छिपाय ॥
तिन तिन चले छिपाय प्रगट में होय हरकत ।
भीड़ भाड़ से डेरै भीड़ में नहीं बरकत ॥
• धनी भयो जब आप मिली हीरा की खानी ।
• उग है सब संसार जुगत से चलै अपानी ॥
जो हैं रहते गुप्त सदा वह मुक्ति में रहते ।
उन पर आवै खेद प्रगट जो सब से कहते ॥
पलटू कहिये उसी से जो तन मन दे ले जाय ।
जिन जिन पाया बस्तु को तिन तिन चले छिपाय ॥

(१२२)

• बीज वासना को जरै तब छूटै संसार ॥

• (१) जल्द । (२) नर्कों की संख्या सत्ताईस लिखी है और अट्ठाईसवीं बैतरनी नदी है जिस को पित्त लोक में पहुँचने के लिए जीव को पार करना पड़ता है । (३) वैर, बिगाड़ । (४) बेड़ी ।

तब छूटै संसार जगत से प्रीति न कीजै ।
लोभ मोह को जारि सत्य पद मारग लीजै ॥
मारै भूख पियास जगत की करै न आसा ।
काम क्रोध को जारि तजै सब भोग बिलासा ॥
सदा रहै निर्वृत्त^१ चित्त ना अंतै जावै ।
मन को लेवै फेरि भजन में जाय लगावै ॥
पलटू हिरन के कारने जड़भर्त^२ लिया अवतार^३ ।
बीज बासना को जरै तब छूटै संसार ॥

(१२३)

तो कहँ कोऊ कछु कहै कीजै अपनो काम ॥
कीजै अपनो काम जगत को भूकन दीजै ।
जाति बरन कुल खोय संतन को मारग लीजै ॥
लोक बेद दे छोड़ि करै कोउ कितनौ हाँसी ।
पाप पुन दोउ तजौ यही दोउ गर की फाँसी ॥
करम न करिहौ एक भ्रम कोउ लाख दिखावै ।
टै न तेरी टेक कोटि ब्रह्मा समुझावै ॥
पलटू तनिक न छोड़िहौ जिउ के संगै नाम ।
तो कहँ कोऊ कछु कहै कीजै अपनो काम ॥

(१२४)

इहाँ उहाँ कुछ है नहीं अपने मन का फेर ॥
अपने मन का फेर सक्ति सिव दूसर नाहीं ।
माया से है अंत^३ तेहि से बचे माहीं ॥
जब मैं इहवाँ रहा सोच उहवाँ की भारी ।

(१) निष्काम । (२) जड़ भरत राजा भरत को कहते हैं जिन्होंने राज-पाट छोड़ कर वन में भगवत आराधन के लिये वास किया । एक हिरन से इनको ऐसी गहरी प्रीति हो गई थी कि उसी के वियोग में प्राण त्याग किया और उस वासना के कारन हिरन को चोला पाया । (३) अलग ।

उहवाँ देखा जाय कुदरत कुल रही हमारी ॥
 जोग किये का होय भंगि^१ जो आवै नाहीं ।
 केतिक कोटिन जोग रहत हैं भंगै^१ माहीं ॥
 पलटू पावै सहज में सतगुरु की है देर ।
 इहाँ उहाँ कुछ है नहीं अपने मन का फेर ॥

(१२५)

मन की मौज से मौज है और मौज किहि काम ॥
 और मौज किहि काम मौज जौ ऐसी आवै ।
 आठौ पहर अनन्द भजन में दिवस बितावै ॥
 ज्ञान समुद्र के बीच उठत है लहर तरंगा ।
 तिरबेनी के तीर सरसुती जमुना गंगा ॥
 संत सभा के मध्य सब्द को फड़^२ जब लागै ।
 पुलकि पुलकि गलतान^३ प्रेम में मन को पागै ॥
 पलटू रहै बिबेक से छूटै नहि सतनाम ।
 मन की मौज से मौज है और मौज किहि काम ॥

(१२६)

जो साहिब का लाल है सो पावैगा लाल^४ ॥
 सो पावैगा लाल जाइ के गोता मारै ।
 मरजीवा है जाय लाल को तुरत निकारै ॥
 निसि दिन मारै मौज मिली अब बस्तु अपानी ।
 ऋद्धि सिद्धि औ मुक्ति भरत हैं उन घर पानी ॥
 वे साहन के साह उन्हें है आस न दूजा ।
 ब्रह्मा बिस्नु महेस करै सब उनकी पूजा ॥
 पलटू गुरु भक्ती बिना भेष भया कंगाल ।

(१) युक्ति । (२) फड़ = बाजार—दूसरी लिपि में “झड़” है । (३) मतवाला ।

(४) पहिले “लाल” के अर्थ बालक या पुत्र के हैं और दूसरे लाल के अर्थ जवाहिर के हैं ।

जो साहिब का लाल है सो पावैगा लाल ॥

(१२७)

जीव जाय तो जाय दे जन्म जाय बरु नष्ट ॥

जन्म जाय बरु नष्ट लोक की तजो बड़ाई ।

दुख नाना सहि रहो पड़ौ दरबार में जाई ॥

मात पिता निज बन्धु तजौ भगनी सुत नारी ।

तजि दो भोग बिलास सहत रहौ सब की गारी ॥

नाचौ घूँघट खोलि ज्ञान का ढोल बजाओ ।

देखै सब संसार कलाएँ उलटी खाओ ॥

पलटू नाम न छोड़िहो सहि लो इतना कष्ट ।

जीव जाय तो जाय दे जन्म जाय बरु नष्ट ॥

(१२८)

खोजत हीरा को फिरै नहीं पोत को दाम ॥

नहीं पोत को दाम जौहरि की गाँठ खुलावै ।

बातन की बकवाद जौहरी को बिलमावै ॥

लम्बी बोलत बात करै बातन की लदनी ।

कौड़ी गाँठि नाहिं करत है बातें इतनी ॥

लिहा जौहरी ताड़ु^१ फिरा है गाहक खाली ।

थैली लई समेटि दिहा गाहक को ढाली ॥

लोक लाज छूटै नहीं पलटू चाहै नाम ।

खोजत हीरा को फिरै नहीं पोत को दाम ॥

(१२९)

मूरख को समुझाइये नाहक होइ अकाज ॥

नाहक होइ अकाज कहे से बात न बूझै ।

अंधा आठौ गाँठि इलाज न पन्थ न सुझै ॥

ब्रह्मा उतरै आय कहे से ज्ञान न आवै ।

अमृत दीजै ब्याल^१ नहीं वा को बिष जावै ॥
 लगै न भीतर ज्ञान ताहि सँ मन न मिलावै ।
 मारै भाल पषान धसै नहिं उलटा आवै ॥
 पलट जो बूझै नहीं बोलै से रहु बाज ।
 मूरख को समुझाइये नाहक होइ अकाज ॥

(१३०)

तीन लोक पेश गया बिना बिचार बिबेक ॥
 बिना बिचार बिबेक भये सब एकै घानी ।
 पीना^२ भा संसार जाठि ऊपर मरानी ॥
 इतना दुख सब सहै तूहू पर नाहिं डेराते ।
 फिर फिर पेरे जायँ कर्म में फिर लपटाते ॥
 देखी देखा पड़ै आपु से आपु पेशवै ।
 पेरे से जो बचै ताहि को हँसी^३ लगावै ॥
 पलट में रोवन लगा चलता कोल्हू देख ।
 तीन लोक पेश गया बिना बिचार बिबेक ॥

(१३१)

लोक लाज कुल छाड़ि कै करि लो अपना काम ॥
 करि लो अपना काम सोच मोहिं वा दिन केरी ।
 जेहि से कौल करार कौल से आपन हेरी ॥
 कीन्हों भक्ति करार जन्म तब मानुष पायो ।
 मोकहँ है सो चेत गर्भ के बिच करि आयो ॥
 औंधे वासन मँहै नीर जिन्ह लिया उबारी ।
 तेकहँ तजि कै रहौं कुसल का होय तुम्हारी ॥
 जगत हँसै तो हँसन द पलटू हँसै न राम ।
 लोक लाज कुल छाड़ि कै करि लो अपना काम ॥

(१३२)

तन मन लज्जा खोइ कै भक्ति करौ निर्धार ॥

भक्ति करौ निर्धार लोक की लाज न मानौ ।
 देव पितर मुख खाक डारि इक गुरु को जानौ ॥
 तजि दो कुल की रीति खोलि घूँघट को नाचौ ।
 बेद पुरान मत काच काछनी काछौ साचौ ॥
 सुभ आसुभ दोउ काटु पाँव की अपने बेरी ।
 निसि दिन रहौ अनन्द कोऊ का करिहै तेरी ॥
 पलटू सतगुरु चरन पर डारि दहु सिर भार ।
 तन मन लज्जा खोइ कै भक्ति करौ निर्धार ॥

(१३३)

लोक लाज नहिं मानिहौ तन मन लज्जा खोय ॥
 तन मन लज्जा खोय छोड़ि कै मान बड़ाई ।
 जाति बरन कुल खोय पड़ौगे सरन में जाई ॥
 लाख कोऊ जो हँसै जगत की लाज न मानौ ।
 ज्यों हिन्दू त्यों तुरुक सकल घट साहिब जानौ ॥
 नाचौ घूँघट खोलि ज्ञान की ढोल बजाओ ।
 काटौ जम की फाँस भरम को दूर बहाओ ॥
 पलटू बरिहौ नाम को होनी होय सो होय ।
 लोक लाज नहिं मानिहौ तन मन लज्जा खोय ॥

(१३४)

जेहि सुमिरे गनिका तरी ता को सुमिरु गँवार ॥
 ता को सुमिरु गँवार भला अपना जो चाहो ।
 भूठा है संसार रैन सुपन सा जानो ॥
 माता पिता सुत बन्धु भूठ इनको सब जानो ।
 सतसंगति हरि भजन सत्त दुइ इनको मानो ॥
 और देव सब बृथा आस इन की ना कीजै ।

(१) ब्याहो ।

सब देवन के देव हरी अन्तर भजि लीजै ॥
 पलट हरि के भजन बिन कोउ न खतरै पार ।
 जेहि सुमिरे गनिका तरी ता को सुमिरु गँवार ॥

(१३५)

ज्यों ज्यों भीजै कामरी त्यों त्यों गरुई होय ॥
 त्यों त्यों गरुई होय सुने संतन की बानी ।
 ठोपै ठोप अघाय ज्ञान के सागर पानी ॥
 रस रस बाढ़ै प्रीति दिनों दिन लागन^१ लागी ।
 लगत लगत लगि जाय भ्रम आपुइ से भागी ॥
 रस रस चलै सो जाय गिरै जो आतुर^२ धावै ।
 तिल तिल लागै रंग भंगि^३ तब सहजै आवै ॥
 भक्ति पोट पलट करै धीरज धरै जो कोय ।
 ज्यों ज्यों भीजै कामरी त्यों त्यों गरुई होय ॥

(१३६)

वे बोलैं मैं चुप रहौ आपुइ जाते हारि ॥
 आपुइ जाते हारि कथनियाँ बाद^४ न आवैं ।
 घरे मसलहत करैं बटुरि कै सौ सौ धावैं ॥
 आवैं हमरे पास बैठि कै गाल बजावैं ।
 उलटा पुलटा कहैं बचन बिपरीत सुनावैं ॥
 बोली ठोली करैं छिमा करि चुप मैं मारैं ।
 भँकि भँकि फिरि जायँ जुगत से उनको टारैं ॥
 पलट हम से लड़न को आवै सब संसार ।
 वे बोलैं मैं चुप रहौ आपुइ जाते हारि ॥

(१३७)

जौं लगि लागै हाथ ना करम न कीजै त्याग ॥
 करम न कीजै त्याग जक्त की बूझ बढ़ाई ।

ओहु ओर डारै तोरि एहर कुछ एक न पाई ॥
 उत कुल से वे गये नाहिं इत मिला ठिकाना ।
 केहू ओर में माहिं बीच के बीच भुलाना ॥
 जेहूँ जेहूँ पावै बस्तु तेहूँ तेहूँ करम को छोड़ै ।
 खातिर जमा को लेइ जगत से मुहड़ा मोड़ै ॥
 पलटू पग धरु निरख करि ता तें लगै न दाग ।
 जौं लागि लागै हाथ ना करम न कीजै त्याग ॥

(१३८)

दुइ पासाही फकर^१ की इक दुनियाँ इक दीन ॥
 इक दुनियाँ इक दीन दोऊ को राखै राजी ।
 सब की मिलै मुराद गैब की नौबति बाजी ॥
 हाथ जोरि मुहताज सिकन्दर रहते ठाढ़े ।
 हुकुम बजावहिं भूप जबाँ^२ से जो कछु काढ़े ॥
 चलै फहम^३ की फौज दरोग^४ की कोट ढहाई ।
 बेदावा तहसोल सबुर कै तलब लगाई ॥
 पलटू ऐसी साहिबी साहिब रहै तबीन^५ ।
 दुइ पासाही फकर की इक दुनियाँ इक दीन ॥

(१३९)

चोर मूसि घर पहुँचा मूरख पहरा देइ ।
 मूरख पहरा देइ भोर भये आपुइ रोवै ।
 राँध परोसी चोर माल धरि गाफिल सोवै ॥
 सुनहु साहु धनवंत सबै सम्पति के घाती ।
 नहिं कीजै बिस्वास जागत रहिये दिन राती ॥
 दिन दिन बढ़ती होइ आन को चित्त न दीजै ।
 सब से रहिये दूर केहू को मित्र न कीजै ॥

पलटू जो ऐसे रहै—द्रव्य कोऊ नहिं लेइ ।
चोर मूसि घर पहुँचा मूरख पहरा देइ ॥

(१४०)

पलटू ऐसे दास को भ्रम करै संसार ॥
भ्रम करै संसार होइ आसन से पक्का ।
भली बुरी कोउ कहै रहै सहि सब का धक्का ॥
धीरज धै संतोष रहै दृढ़ है ठहराई ।
जो कछु आवै खाइ बचै सो देइ लुटाई ॥
लगै न माया मोह जगत की छोटे आसा ।
बल तजि निरबल होय सबुर से करै दिलासा ॥
काम क्रोध को मारि कै मारै नींद अहार ।
पलटू ऐसे दास को भ्रम करै संसार ॥

(१४१)

बूझि समुझि ले बालके पाछे तौ सिर खोलु ॥
पाछे तौ सिर खोलु बचा तुम सुनौ फकीरी ।
हेलुआ जूती एक, नाहिं आवै दिलगीरी^१ ॥
रूखा सूखा खाउ मिलै जो गम का टुकड़ा ।
फीका कड़वा नाहिं स्वाद सब छोड़ौ भगड़ा ॥
० हक हलाल वह जानु सबर से बैठे आवै ।
० खाना वही हराम किसी से माँगन जावै ॥
पलटू वह घर राम का बच्चा तू जनि बोलु ।
बूझि समुझि ले बालके पाछे तौ सिर खोलु ॥

(१४२)

पलटू नीच से ऊँच भा नीच कहै ना कोय ॥
नीच कहै ना कोय गये जब से सरनाई ।

नारा बहि कै मिल्यो गंग में गंग कहाई ॥
 पारस के परसंग लोह से कनक कहावै ॥
 आगि मँहै जो परै जरै आगै होइ जावै ॥
 राम का घर है बड़ा सकल ऐगुन छिपि जाई ।
 जैसे तिल को तेल फूल संग बास बसाई ॥
 भजन केरे परताप तें तन मन निरमल होय ॥
 पलटू नीच से ऊँच भा नीच कहै ना कोय ॥
 (१४३)

हस्ती बिनु मारे मरै करै सिंह को संग ॥
 करै सिंह को संग सिंह की रहनी रहना ।
 अपनो मारा खाय नहीं मुरदा को गहना ॥
 नहिं भोजन नहिं आस नहीं इन्द्री की तिष्ठा^१ ।
 आठ सिद्धि नौ निद्धि ताहि को देखत बिष्ठा^२ ॥
 दुष्ट मित्र सब एक लगै ना गरमी पाला ।
 अस्तुति निंदा त्यागि चलत है अपनी चाला ॥
 पलटू भूठा ना टिकै जब लगि लगै न रंग ।
 हस्ती बिनु मारे मरै करै सिंह को संग ॥
 (१४४)

स्वाँती को जल एक है अपनी अपनी खानि ॥
 अपनी अपनी खानि सीप से मोती कहियै ।
 हीरा होइ हिरंज सीस गज मुक्ता लहियै ॥
 केरा परै कपूर बेन^३ तें लोचन^४ ब्याला^५ ।
 अहि मुख जहर समान उपल^६ तें लोह कराला ॥
 गौ लोचन गौ सीस मिरग मद नाभि तें जानौ ।
 भिन्न भिन्न गुन होय नीर एकहि पहिचानौ ॥

(१) चाह । (२) गलीज । (३) बाँस । (४) बंसलोचन । (५) दुष्ट—यह अहि =
 साँप का विशेषण है । (६) पत्थर ।

पलटू खामिंद एक है निसचै प्रेम प्रधान ।
 ० उपजै वस्तु सुभाव तें अपनी अपनी खानि ॥

(१४५)

भक्ति बीज जब बोवै निसि दिन करै बिबेक ॥
 निसि दिन करै बिबेक लागि तब निकरन साखा ।
 डार पात बहु फूल जतन से जिन ने राखा ॥
 हरि चरचा से सींचि ज्ञान कै बाँधै बेड़ा ।
 पहुँचै सोर पताल खात संतन कै खेड़ा^१ ॥
 सोभित बृच्छ बिसाल मीठ फल लटकन लागे ।
 बिस्वास सोई रखवार बैठि कै पहरा जागै ॥
 पलटू यहि बिधि जोगवै उपजै ज्ञान बिसेख ॥
 भक्ति बीज जब बोवै निसि दिन करै बिबेक ॥

(१४६)

पलटू सरबस दीजिये मित्र न कीजै कोय ॥
 मित्र न कीजै कोय चित्त दै बैर बिसाहै^२ ।
 निस दिन होय विनास और वह नाहिं निबाहै ॥
 चिन्ता बाढ़ै रोग लगा छिन छिन तन छीजै ।
 कम्मर^३ गरुआ होय ज्यों ज्यों पानी से भीजै ॥
 जोग जुगत की हानि जहाँ चित अंतै जावै ।
 भक्ति आपनी जाय एक मन कहुँ लगावै ॥
 ० राम मितार्ई ना चलै और मित्र जो होय ।
 ० पलटू सरबस दीजिये मित्र न कीजै कोय ॥

(१४७)

खा^४ टटै खा फाटै कहिये परदा खोल ॥
 कहिये परदा खोल खा ना बाकी कीजै^५ ।

(१) गाँव । (२) मोल ले । (३) कम्मल । (४) चाहै । (५) जर्री (खा)
 भर न उठाय रखवो ।

बात कहै दुइ टुक मैल^१ ना पानो पीजै ॥
 उन से रहिये दूरि बड़े वे लोग अधरमी ।
 तुरतहि देइ जवाब बचै ना सरमा सरमी ॥
 कहै मित्र की बात करें दुस्मन की करनी ।
 ना कीजै बिस्वास करें कैसौ ब्योहरनी ॥
 पलटू छूरी कपट की बोलैं मीठे बोल ।
 खा^२ टटै खा फाटै कहिये परदा खोल ।

॥ ज्ञान ॥

(१४८)

परदा अंदर का टरै देखि परै तब रूप ॥
 देखि परै तब रूप मिटै सब मन का धोखा ।
 परै सबद टकसार बहुत चोखे से चोखा ॥
 जोग-जीत जब होय भूमिका ज्ञान की पावै ।
 लागै सहज समाधि सक्ति से सीव बनावै ।
 महल करै उँजियार तेल बिनु दीपक बाती ।
 परमानन्द अनन्द भजन में दिन औ राती ॥
 पलटू सूझै है नहीं जहाँ अधोमुख कूप ।
 परदा अंदर का टरै देखि परै तब रूप ॥

(१४९)

समुझाये से क्या भया जब ज्ञान आपु से होय ॥
 ज्ञान आपु से होय हंस को कौन सिखावै ।
 छोर करत है पान नीर को वह अलगावै ॥
 अललपच्छ इक रहै गगन में अंडा देवै ।
 बच्चा सुरति सम्हार उलटि कै फिर घर लेवै ॥
 केहरि के सिसु कहै^२ कौन उपदेस बतावै ।
 कुंजर^३ देहि गिराइ बात में बिलम्ब न लावै ॥

पलटू सतगुरु रहनि को परखि लेय जो कोय ।
समुझाये से क्या भया जब ज्ञान आपु से होय ॥

(१५०)

ज्ञान समाधि जा को मिली सो क्या लावै ध्यान ॥
सो क्या लावै ध्यान ध्यान दुतिया कहवावै ॥
आप भया पासाह कौन के मुजरे जावै ।
० भजनी^१ से भा भजत^२ कौन अब आवै जावै ।
लिहा निसाना मारि कौन अब तीर चलावै ॥
मन के संकल्प भजन रूप अपनो दरसावै ।
जो इहवाँ सो उहाँ संकल्प को दूरि बहावै ॥
पलटू लगी सो लगी गई कौन होय हैरान ।
ज्ञान समाधि जा को मिली सो क्या लावै ध्यान ॥

(१५१)

समुझे को समुझावै हीरा आगे पोत ॥
हीरा आगे पोत ज्ञानी को मूढ़ बुझावै ।
जहवाँ आँधी चलै बेना कै बतास^३ चलावै ॥
अटकर सेती अंध डिठियारे^४ राह बतावै ।
जैसे पंडित चतुर संत से बाद^५ न आवै ॥
सुधा क पीवनहार ताहि को छाछ दिखावै ।
जेकरे बाजै तूर तहाँ का डफ बजावै ॥
पलटू दीपक का करै जहँ सूरज की जोत ।
समुझे को समुझावै हीरा आगे पोत ॥

(१५२)

अपनी अपनी करनी अपने अपने साथ ॥

(१) भजन करने वाला । (२) जिसका भजन किया जाता है । (३) पंखे की हवा ।
(४) आँख वाले को । (५) बाज न आवै, पीछे पड़ा रहे ।

अपने अपने साथ करै सो आगे आवै ।
 बाप कै करनी बाप पूत कै पूतै पावै ॥
 जोरु कै जोरुहिं फलै खसम कै खसम कौ फलता ।
 अपनी करनी सेती जीव सब पार उतरता ॥
 नेकी बढो है संग और ना संगी कोई ।
 देखौ बूझि बिचारि संग ये जैहैं दोई ॥
 पलटू करनी और की नहीं और के माथ ।
 अपनी अपनी करनी अपने अपने साथ ॥

(१५३)

सरबंगी जो नाम कै रहनी सहित बिबेक ॥
 रहनी सहित बिबेक एक करि सब कौ मानै ।
 खान पियन में जुदा नहीं एकै में सानै ॥
 लिये रहै मर्जाद तजै ना नेम अचारा ।
 धर्म सनातन सहित असुभ सुभ करै बिचारा ॥
 बोलै सब्द अघोर भजन अद्वैता अंगी ।
 कारज निर्मल करै सोई पूरा सरबंगी ॥
 पलट बाहर कुल धरम भीतर राखै एक ।
 सरबंगी जो नाम कै रहनी सहित बिबेक ॥

॥ शरण और व्रत टेक) ॥

(१५४)

करम धरम सब छाड़ि कै पड़े सरन में आय ॥
 पड़े सरन में आय तजो बल बुधि चतुराई ।
 जप तप नेम अचार नहीं जानौ कछु भाई ॥
 पूजा ज्ञान न ध्यान तिलक नहिं देवै जानौ ।
 जोग जुगत कछु नहीं नहीं तीरथ व्रत मानौ ॥
 एक भरोसा पाय दिया सिर भार लराई १ ।

पंखी को पंख^१ गया रहा इक नाम सहाई ॥
 पलटू में जियतै मुवा नाम भरोसा पाय ।
 करम धरम सब छाड़ि कै पड़े सरन में आय ॥

(१५५)

- ० पलटू सोवै मगन में साहिब चौकीदार ॥
- ० साहिब चौकीदार मगन होइ सोवन लागे ।
- ० दूनों पाँव पसार देखि कै दुस्मन भागे ॥
- ० जाके सिर पर राम ताहि को बार न बाँकै ।
 गाफिल में मैं रहौ आपनी आपुइ ताकै ॥
 हम को नाहीं सोच सोच सब उन को भारी ।
 छिन भरि परे न भोर^२ लेत है खबर हमारी ॥
 लाज तजा जिन राम पर डारि दिहा सिर भार ।
 पलटू सोवै मगन में साहिब चौकीदार ॥

(१५६)

कोउ कितनौ चुगुली करै सुनै न बात^३ हमार ॥
 सुनै न बात हमार गये जब से सरनाई ।
 सब ऐगुन करि माफ लिहिन मोकँह अपनाई ॥
 करत फिरौ अन्याय काम ना क्रोध बिचार ।
 कैसेउ पूत कपूत पिता को आखिर प्यारा ।
 लोभी लंपट चोर कुकरमी जातिन नीचा ।
 अपने सरन की लाज जानि पद दीन्हेउ ऊँचा ॥
 पलटू हम से राम से ऐसो भा ब्योहार ।
 कोउ कितनौ चुगुली करै सुनै न बात हमार ॥

(१५७)

जौन काछ कौ काछिये नाच नाचिये सोय ॥
 नाच साचिये सोय तबै तौ सोभा पावै ।

बिना काछ कै नाच भाँड़ कै स्वाँग बनावै ॥
 आदि अंत मधि माहिं जो हरि कौ बत निबाहै ।
 जीवन ता कौ सुफल निगम दिन राति सराहै ॥
 बात जीव के संग नाहिं जो हारि ललकरी^१ ।
 हरि भक्तन की रीति टेक पकरी सो पकरी ॥
 पलटू काछ औ नाच से तनिक न तजविज^२ होय ।
 जौन काछ कौ काछिये नाच नाचिये सोय ॥

(१५८)

साधु को ऐसा चाहिये ज्यों सिसु^३ अड़नि अड़ै ॥
 ज्यों सिसु अड़नि अड़ै टेक अपनी नहिं टारै ।
 पुरजे पुरजे कटै कोऊ कितनौ जो मारै ॥
 धरन धरी सो धरी वही हरि के व्रत धारी ।
 धोये तनिक न छुटै रंग जब चढ़ा करारी ॥
 धरन नीबाहै और साँच में दाग न लागै ॥
 ज्यों पतिवर्ता नारि डिगै ना लाख डिगावै ॥
 पलटू लोह की मेख ज्यों पत्थर बीच गड़ै ।
 साधु को ऐसा चाहिये ज्यों सिसु अड़नि अड़ै ॥

॥ विनय ॥

(१५९)

पतितपावन बाना धर्यो तुमहिं परी है लाज ॥
 तुमहिं परी है लाज बात यह हम ने बूझी ।
 जब तुम बाना धर्यो नाहिं तब तुम कहँ सूझी ॥
 अब तो तारे बनै नहीं तो बाना उतारौ ।
 फिर काहे को बड़ा बाच जो कहिकै हारौ ॥
 आगहिं तुम गये चूक दोष नहिं दीजै मेरो ।
 तुम यह जानत नाहिं पतित होइहैं बहुतेरो ॥

पलटू मैं तो पतित हों किये असुभ सब काज ।
पतितपावन बना धर्यो तुमहिं परी है लाज ॥

(१६०)

दीनन पर दाया करौ सुनिये दीनदयाल ॥
सुनिये दीनदयाल दीन को बहुत निवाजा ।
भया भभीखन दीन किया लंकापति राजा ॥
रिपु रावन की बधू दीन है बिनती कीन्हा ।
सिलोचना पति सोस मुक्ति सायुज्य सो दीन्हा ॥
ब्रह्म कीन्हौ द्रोह गयौ बछरा हरि आनी^१ ।
दीन भया जब आय मित्रता वा से मानी ॥
पलटू पावै भक्ति को लेहु जक्त जंजाल ।
दीनन पर दाया करौ सुनिये दीनदयाल ॥

७ (१६१) ७

० पलटू पूछै हंस से बिनती कै कर जोर ॥
बिनती कै कर जोर साच तुम बात बतावौ ।
भई साहिबी तोर नर्क से जीव बचावौ ॥
अंधा पंगुल लूल सबन कौ मिलै ठिकाना ।
इक इक सब के हाथ नाम का द्यो परवाना ॥
संत रूप अवतार लियौ परस्वारथ काजा ।
चौरासी चौखान सबन के तुम हौ राजा ॥
जीव तरै जब जक्त कौ तब तुम बंदीछोर ।
पलटू पूछै हंस से बिनती कै कर जोर ॥

॥ दीनता ॥

(१६२)

मन मिहीन करि लीजिये जब पिउ लागै हाथ ॥

(१) कथा है कि ब्रह्मा श्रीकृष्ण की परीक्षा के लिये उन के सब बछड़े हर कर अपने लोक को ले गये जिस पर श्रीकृष्ण ने वैसे ही बछड़े तुरंत रच लिये । यह लीला देख कर ब्रह्मा बहुत लज्जित हुए ।

जब पिउ लागै हाथ नीच है सब से रहना ।
 पच्छा पच्छी त्यागि ऊँच बानी नहिं कहना ॥
 मान बड़ाई खोय खाक में जीते मिलना ।
 गारी कोउ दै जाय छिमा करि चुपके रहना ॥
 सब की करै तारीफ आप को छोटा जानै ।
 पहिले हाथ उठाय सीस पर सब को आनै^१ ।
 पलटू सोई सुहागिनी हीरा भलकै माथ ।
 मन मिहीन करि लीजिये जब पिव लागै हाथ ॥

(१६३)

जोग जुगत ना ज्ञान कछु गुरु दासन को दास ॥
 गुरु दासन को दास सन्तन ने कीन्ही दाया ।
 सहज बात कछु गहिनि छुड़ाइनि हरि की माया ॥
 ताकिनि तनिक कटाच्छ भक्ति भूतल^२ उर जागी ।
 स्वस्ता^३ मन में आई जगत की भ्रमना भागी ॥
 भक्ति अभय पद दीन्ह सनातन मारग वा की ।
 अबिरल ओकर नाम लगै ना कबहीं टाँकी ॥
 पलटू ज्ञान न ध्यान तप महा पुरुष कै आस ।
 जोग जुगत ना ज्ञान कछु गुरु दासन को दास ॥

(१६४)

दूसर पलटू इक रहा भक्ति दई तेहि जान ॥
 भक्ति दई तेहि जान नाम पर पकर्यो मोकहँ ।
 गिरा परा धन पाय छिपायों में ले ओकहँ ॥
 लिखा रहा कुछ आन कर्म में दीन्हा आनै ॥
 जानौं महीं अकेल कोऊ दूसर नहिं जानै ॥
 पाछे भा फिर चेत देय पर नाहीं लीन्हा ॥

(१) प्रनाम करै । (२) पृथ्वी भर को । (३) शांति ।

आखिर बड़े की चूक जोई निकसा सोई कीन्हा ॥
 पलटू में पापी बड़ा भूल गया भगवान ।
 दूसर पलटू इक रहा भक्ति दर्ई तेहि जान ॥

॥ मान ॥

(१६५)

मान बड़ाई कारने पचि मूआ संसार ॥
 पचि मूआ संसार जती जोगी सन्यासी ।
 उनहूँ को है चाह गुफा के भीतर बासी ॥
 सिद्ध सिद्धई करै पभुता कारन जाई ।
 गोड धरावन हेतु महंत उपदेस चलाई ॥
 राजा रंक फकीर फिरै जो खाक लगाये ।
 सब के मन में चाह है खुसी बड़ाई पाये ॥
 पलटू हरि के भक्त से गई पभुता हार ।
 मान बड़ाई कारने पचि मूआ संसार ॥

(१६६)

खुदी खोय^१ को खोवै सोई है दुरवेस ॥
 सोई है दुरवेस रूह की करै सफाई ।
 दिल अंदर दीदार नबी का दरसन पाई ॥
 बिन बादल बरसात अबर बिन बरसत पानी ।
 गरमी आतस बिना जवाँ बिन बोलत बानी ॥
 लामकान^२ बेचून^३ लाहुत^४ को दिल दौड़ावै ।
 फना को करै कबूल सोई वह काबा पावै ॥
 पलटू जरै फिकर को रहै जिकर^५ में पेस ।
 खुदी खोय को खोवै सोई है दुरवेस ॥

(१६७)

सब कोइ पीवै कूप जल खारी पड़ा समुन्द ॥

(१) आदत । (२) अनाद पद । (३) अद्वितीय । (४) सून्य । (५) सुमिरन ।

खारी पड़ा समुन्द बड़े सो काम के नाहीं ।
जैसे बड़ी खजूर पथिक को मिलै न छाँहीं ॥
भक्त कहावै बड़े भेष ना खाय को पावै ।
पूजै नाहीं साध बड़े घर ही कहवावै ॥
खान पियन को नाहि बचन करकसे सुनावै ।
पर्वत बड़े कठोर नजर दूरहि से आवै ॥
पलटू संपति सुम की खरचै ना इक बुन्द ।
सब कोइ पीवै कूप जल खारी पड़ा समुन्द ॥

(१६८)

बढ़ते बढ़ते बढ़ि गये जैसे बड़ी खजूर ॥
जैसे बड़ी खजूर पथिक छाया नहि पावै ।
त्यों त्यो कै जो फरै ताहि कैसे कोउ खावै ॥
पात में काँटा रहै छुवत कै लोहू आवै ।
पेड़ सोऊ बेकाम कुवा को धरन बनावै ॥
सम्पति में बढ़ि जाय दया बिन भला भिखारी ।
जातिहु में बढ़ि जाय भक्ति बिन भला चमारो ॥
पलटू सोभा दोऊ की दया भक्ति से पूर ।
बढ़ते बढ़ते बढ़ि गये जैसे बड़ी खजूर ॥

॥ भेद ॥

(१६९)

उलटा कूवा गगन में तिस में जरै चिराग ॥
तिस में जरै चिराग बिना रोगन बिन बाती ।
छः रिनु बारह मास रहत जरतै दिन राती ॥
सतगुरु मिला जो होय ताहि की नजर में आवै ।
बिन सतगुरु कोउ होय, नहीं वा को दरसावै ॥
निकसै एक अवाज चिराग की जोतिहि माहीं ।

ज्ञान समाधी सुनै और कोउ सुनता नाही ॥
 पलटू जो कोई सुनै ता के पूरे भाग ॥
 उलटा कूवा गगन में तिस में जरै चिराग ॥

(१७०)

बंसी बाजी गगन में मगन भया मन मोर ॥
 मगन भया मन मोर महल अठवें पर बैठा ॥
 जहँ उठै सोहंगम सब्द सब्द के भीतर पैठा ॥
 नाना उठै तरंग रंग कुछ कहा न जाई ॥
 चाँद सुरज छिपि गये सुषमना सेज बिछाई ॥
 छूटि गया तन येह नेह उनहीं से लागी ॥
 दसवाँ द्वारा फोड़ि जोति बाहर है जागी ॥
 पलटू धारा तेल की मेलत है गया भोर ॥
 बंसी बाजी गगन में मगन भया मन मोर ॥

(१७१)

चढ़ै चौमहले महल पर कुंजी आवै हाथ ॥
 कुंजी आवै हाथ सब्द का खोलै ताला ॥
 सात महल के बाद मिलै अठएँ उँजियाला ॥
 बिनु कर बाजै तार नाद बिनु रसना गावै ॥
 महा दीप इक बरै दीप में जाय समावै ॥
 दिन दिन लागै रंग सफाई दिल की अपने ॥
 रस रस मतलब करै सिताबी^१ करै न सपने ॥
 पलटू मालिक तुही है कोई न दूजा साथ ॥
 चढ़ै चौमहले महल पर कुंजी आवै हाथ ॥

(१७२)

चाँद सुरज पानी पवन नहीं दिवस नहिं रात ॥

नहीं दिवस नहि रात नाहिं उतपति संसारा ।
 ब्रह्मा बिस्नु महेस नाहिं तब किया पसारा ॥
 आदि जोति बैकुण्ठ सुन्य नाहीं कैलासा ।
 सेस कमठ दिग्पाल नाहिं धरती आकासा ॥
 लोक बेद पलटू नहीं कहों मैं तब की बात ।
 चाँद सुरज पानी पवन नहीं दिवस नहि रात ॥

(१७३)

बिनु कागद बिनु अचछरे बिनु मसि से लिखि देय ॥
 बिनु मसि से लिखि देय सोई पंडित कहवावै ।
 बिनु रसना कहै बेद अकथ की कथा सुनावै ॥
 छुटी बात अस्थूल सूखम में मिला ठिकाना ।
 फिर पोथी क्या पढ़ै अचछर में आप समाना ॥
 निःअचछर अब मिला अचछर को क्या ले करना ।
 होरा लागा हाथ पोत की कौन सरहना^१ ॥
 पलटू पंडित सोई है कमल हाथ नहिं लेय ।
 बिनु कागद बिनु अचछरे बिनु मसि से लिखि देय ॥

(१७४)

भंडा गड़ा है जाय के हद बेहद के पार ॥
 हद बेहद के पार तूर जहँ अनहद बाजै ॥
 जगमग जोति जड़ाव सीस पर छत्र बिराजै ॥
 मन बुधि चित रहे हार नहीं कोउ वह घर पावै ।
 सुस्त सब्द रहै पार बीच से सब फिरि आवै ॥
 बेद पुरान की गम्भ सकै ना उहवाँ जाई ।
 तीन लोक के पार तहाँ रोसन रोसनाई ॥
 पलटू ज्ञान के परे है तकिया तहाँ हमार ।

भंडा गड़ा है जाय के हृद बेहृद के पार ॥

(१७५)

जागत में एक सूपना मोहिं पड़ा है देख ॥
मोहिं पड़ा है देख नदी इक बड़ी है गहिरी ।
ता में धारा तीन बीच में सहर बिलौरी ॥
महल एक अधियार बरै तहँ गैब की बाती ।
पुरुष एक तहँ रहै देखि छवि वा की माती ॥
पुरुष अलापै तान सुना मैं एक ठो जाई ।
वाहि तान के सुनत तान में गई समाई ॥
पलटू पुरुष पुरान वह रंग रूप नहिं रेख ।
जागत में एक सूपना मोहिं पड़ा है देख ॥

॥ अद्वैत ॥

(१७६)

जल से उठत तरंग है जल ही माहिं समाय ॥
जल ही माहिं समाय सोई हरि सोई माया ।
अरुभा बेद पुरान नहीं काहू सुरभाया ॥
फूल मैं है ज्यों बास काठ में आग छिपानी ।
दूध मैं है घिउ रहै नीर घट माहिं लुकानी ॥
जो निर्गुन सो सगुन आर न दूजा कोई ।
दूजा जो कोई कहे ताहि को पातक होई ॥
पलटू जीव और ब्रह्म से भेद नहीं अलगाय ।
जल से उठत तरंग है जल ही माहिं समाय ॥

(१७७)

कोटिन जुग परलय गई हमहों करनेहार ।
हमहों करनेहार हमहि करता के करता ।
जेकर करता नाम आदि में हम हों रहता ॥
मरिहैं ब्रह्मा बिस्तु मृत्यु ना होय हमारी ।

मरिहैं सिय^१ के लाल मरैगी सिव की नारी ॥
 धरती अगिन अकास मुवा है पवन और पानी ।
 आदि जोति मरि गई रही देवतन की नानी ॥
 पलटू हम मरते नहीं ज्ञानी लेहु विचार ।
 कोटिन जुग परलय गई हम हीं करनेहार ॥

(१७८)

आदि अंत हम हीं रहे सब में मेरो बास ॥
 सब में मेरो बास और ना दूजा कोई ।
 ब्रह्मा बिस्नु महेस रूप सब हमरै होई ।
 हमहीं उतपति करें करें हमहीं संहार ।
 घट घट में हम रहैं रहैं हम सब से न्यारा ॥०
 पारब्रह्म भगवान अंस हमरै कहवाये ।०
 हमहीं सोहं सब्द जोति हैं सुत्र में आये ॥
 पलटू देह के धरे से वे साहिब हम दास ।
 आदि अंत हम हीं रहे सब में मेरो बास ॥

॥ उलटावती ॥

(१७९)

गंगा पाछे को बही मछरी चढ़ी पहार ॥
 मछरी चढ़ी पहार चूल्ह में फन्दा लाया ।
 पुखरा भीटे बाँधि नीर में आग छिपाया ॥
 अहिरिनि फेकै जाल कुहारिन भैंसि चगवै ।
 तेली कै मरिगा बैल बैठि के धुवइन गावै ॥
 महुवा में लागा दाख^२ भाँग में भया लुबाना^३ ।
 साँप के बिल के बीच जाय के मूस लुकाना ॥
 पलटू संत बिबेकी बुझिहैं सबद सभहार ।

(१) सिया नाम सीताजी का है—एक पाठ में “सिव” हैं । (२) मुनक्का ।

(३) एक प्रकार की गोंद जो सुगन्धि के लिए जलाई जाती है ।

गंगा पाछे को बही मछरी चढ़ी पहार ॥

(१८०)

खसम बिचारा मरि गया जोरु गावै तान ॥

जोरु गावै तान फिरा अहिवात^१ हमारा ।

भूठ सकल संसार माँग भरि सेंदुर धारा ॥

हम पतिबरता नारि खसम को जियतै मारी ।

वा को मूडों मूड़ सरबर जो करै हमारी ॥

दुनिया गइ है भागि सुनौ अब राँध परोसिन ।

पिया मरे आराम मिला सुख मोकहँ दिन दिन ॥

पलटू ऐसे पद कहै बूझै सोइ निखान ।

खसम बिचारा मरि गया जोरु गावै तान ॥

(१८१)

खसम मुवा तौ भल भया सिर की गई बलाय ॥

सिर की गई बलाय बहुत सुख हम ने माना ।

लागे मंगल होन बजन लागे सदियाना^२ ॥

दीपक बरै अकास महल पर सेज बिछाया ।

सूतों महीं अकेल खबर जब मुए की पाया ।

सूतों पाँव पसारि भरम की डोरी टूटी ।

मने कौन अब करै खसम बिनु दुविधा छूटी ॥

पलटू सोई सुहागिनी जियतै पिय को लाय ।

खसम मुवा तौ भल भया सिर की गई बलाय ॥

॥ मन ॥

(१८२)

मन मारे मरता नहीं कीन्हे कोटि उपाय ॥

कीन्हे कोटि उपाय नहीं कोइ मन की जानै ।

मन के मन में और कोई जनि मन की मानै ॥

हाड़ चाम नहिं मास नहीं कछु रूप न रेखा ।
 कैसे लागै हाथ नहीं कोउ मन को देखा ॥
 छिन में कथै बैराग छिनै में होवै राजा ।
 छिन में रोवै हँसे छिनै में आपु बिराजा ॥
 पलटू पलकै भरे में लाख कोस पर जाय ।
 मन मारे मरता नहीं कीन्हे कोटि उपाय ॥

॥ माया ॥

(१८३)

माया उगनी जग ठगा इकहै^१ ठगा न कोय ॥
 इकहै ठगा न कोय लिये है तिगुन गाँसी ।
 सुर नर मुनि देय डिगाय करै यह सब की हाँसी ॥
 इंद्रहु को यह ठगा ठगा दुर्बासै जाई ।
 नारद मुनि को ठगा चली ना कछु चतुराई ॥
 सिवसंकर को ठगा बड़े जो नेजाधारी ।
 सिंगी ऋषी जवान^२ बीछ कै बन में मारी ॥
 पलटू इह को सो ठगा जो साचा भक्ता होय ।
 माया उगनी जग ठगा इकहै ठगा न कोय ॥

(१८४)

माया बड़ी बहादुरी लूटि लिहा संसार ॥
 लूटि लिहा संसार केहू को मानै नहीं ।
 तनिक उजुर जो करै ताहि को कच्चा खाही ॥
 कहूँ कनक कहूँ कामिनि सुन्दर भेष बनावै ।
 ताकै जेकरी ओर नजर से मारि गिरावै ॥
 जोगी जती औ तपी गुफा से पकरि मंगावै ।
 बचै न कोऊ भागि दुपहरै लूटा जावै ॥

(१) इस को । (२) बहादुर ।

पलटू डरपै संत से वे मारें पैजार ।
माया बड़ी बहादुरी लूटि लिहा संसार ॥

(१८५)

माया की चक्की चलै पीसि गया संसार ॥
पीसि गया संसार बचै ना लाख बचावै ।
दोऊ पट के बीच कोऊ ना साबित जावै ॥
काम क्रोध मद लोभ चक्की के पीसनहारे ।
तिरगुन डारै भीक^१ पकरि कै सबै निकारे ॥
दुरमति बड़ी सयानि सानि कै रोटी पोवै ।
करम तवा में धारि सेंकि कै साबित होवै ॥
तृस्ना बड़ी छिनारि जाइ उन सब घर घाला ।
काल बड़ा बरियार किया उन एक निवाला ॥
पलटू हरि के भजन बिनु कोऊ न उतरै पार ।
माया की चक्की चलै पीसि गया संसार ॥

(१८६)

नागिनि पैदा करत है आपुइ नागिनि खाय ॥
आपुइ नागिनि खाय नागिनि से कोय न बाचे ।
नेजाधारी सम्भु नागिनि के आगे नाचे ॥
सिंगी ऋषि को जाय नागिनि ने बन में खाई ।
नारद आगे पड़े लहर उनहूँ को आई ॥
सुर नर मुनि गनदेव सभन को नागिनि लीलै ।
जोगी जती औ तपी नहीं काहू को ढीलै^२ ।
सन्त बिबेकी गरुड़ हैं पलटू देखि डेराय ।
नागिनि पैदा करत है आपुइ नागिनि खाय ॥

(१८७)

कुसल कहाँ से पाइये नागिनि के परसंग ॥

(१) मुट्ठी मुट्ठी अनाज जो चक्की में डालते हैं । (२) छोड़े ।

नागिनि के परसंग जीव कै भच्छक सोई ।
 पहरू कीजै चोर कुसल कहवाँ से होई ॥
 रूई के घर बीच तहाँ पावक लै राखै ॥
 बालक आगे जहर राखि करिके वा चाखै ॥
 कनक धार जो होय ताहि ना अंग लगावै ।
 खाया चाहै खीर गाँव में सेर बसावै ।
 पलटू माया से डेरै करै भजन में भंग ।
 कुसल कहाँ से पाइये नागिनि के परसंग ॥

(१८८)

पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन देखा चारिउ खूँट ॥
 देखा चारिउ खूँट माया से बचै न कोई ।
 राजा रंक फकीर माया के बसि में होई ॥
 सब को बसि में करै जगत को माया जीती ।
 आपु न बसि में होय रहै वह सब से रीती ॥
 हरि को देइ भुलाय अमल वह अपना करती ।
 ऐसी है वह नारि खसम को नाहीं डेरती ॥
 पलटू सब संसार को माया लीन्हो लूट ।
 पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन देखा चारिउ खूँट ॥

(१८९)

मन माया छोड़ै नहीं बभै आपु से जाय ।
 बभै आपु से जाय गही ज्यों मरकट मूठी ।
 ज्यों नलनी का सुआ बात सब ऐसी भूठी ॥
 छोड़ै नहीं आपु भरम में पड़ा गँवारा ।
 खैचि लेय जो हाथ कोऊ ना पकड़नहारा ॥
 जिव लै बचै तो भागु भूलि गइ सब चतुराई ।
 रोवन लागे पूत काल ने पकरा आई ॥
 पलटू आसा बधिक है लालच बुरी बलाय ।

मन माया छोड़े नहीं बभै आपु से जाय ॥

॥ अज्ञानता ॥

(१६०)

घर में जिन्दा छोड़ि कै मुरदा पूजन जायँ ॥
 मुरदा पूजन जायँ भोति को सिरदा^१ नावै ।
 पान फूल और खाँड़ जाइ कै तुरत चढ़ावै ॥
 ताल कि माटी आनि ऊँच कै बाँधिनि चोरी ।
 लीपि पोति के धरिनि पूरी औ बग कचोरी ॥
 पीयर लूगा^२ पहिरि जाइ कै बैठिनि बूढ़ा ।
 भरमि भरमि अभुवाइ माँगत हैं खसी^३ कै मँड़ा ॥
 पलटू सब घर बाँटि कै लै लै बैठे खायँ ।
 घर में जिन्दा छोड़ि कै मुरदा पूजन जायँ ॥

(१६१)

जियतै देइ गिरास ना मुए परावै पिंड ॥
 मुए परावै पिंड कौन है खावनहारो ।
 राँध परोसिनि नेवति खवावै ससुरा सारो ॥
 पितरन के मुँह छार धोख दै लेइ बड़ाई ।
 मुए बैल को घास देहु कहु कैसे खाई ॥
 अपने परुसा^४ लेइ पित्र को छोड़ै पानी ।
 करै पित्र से भूत बड़ो मूर्ख अज्ञानी ॥
 पलटू पुरषा मुक्ति में करत भंड औ भिंड ।
 जियतै देइ गिरास ना मुए परावै पिंड ॥

(१६२)

पानी का को देइ प्यास से मुवा मुसाफिर ॥
 मुवा मुसाफिर प्यास डोर औ लुटिया पासै ।
 बैठ कुवाँ को जगत जतन बिनु कौन निकासै ॥

(१) सिजदा = दंडवत । (२) कपड़ा । (३) बकरा । (४) परोसा, पत्तल ।

आगे भोजन धरा थारि में खाता नाहीं ।
 भूख भूख करै सोर कौन दारै मुख माहीं ॥
 दीया बाती तेल आगि है नाहिं जरावै ।
 खसम सोया है पास खसम को खोजन जावै ॥
 पलटू डगरा^१ सूध अटकै कै परता गिर गिर ।
 पानी का को देइ प्यास से मुवा मुसाफिर ॥

(१६३)

लहंगा परिगा दाग फूहरि साबुन से धोवै ॥
 फूहरि धोवै दाग छुटै ना और बढ़ावै ।
 ज्यों ज्यों मलै बनाय सारे लहंगा फैलावै ॥
 गाफिल में गइ सोय खसम को दोष लगावै ।
 ऐसी फूहरि नारि आप को नाहिं बचावै ॥
 धोबी को नहिं देइ घरहिं में आपु छुड़ावै ।
 इक बेर दिहिसि निखारि लाज से नाहिं दिखावै ॥
 पलटू परदा खोलि आपनो घर घर रोवै ।
 लहंगा परिगा दाग फूहरि साबुन से धोवै ॥

(१६४)

अंधरन केरि बजार में गया एक डिठियार ॥
 गया एक डिठियार सबै अंधा उठि धाये ।
 अहमक आये आजु सबै मिलि तारो लाये ॥
 डारौ आँखी फोरि रहौ तुम हमरी नाई ।
 सब अंधरन मिलि अंध अंध वा को ठहराई ॥
 जँहवाँ लाखन अंध एक क्या करै बिचारा ।
 सुनै न वा की कोऊ तहाँ डिठियारै हारा ॥
 पलटुदास यहि बात को कोऊ न करै बिचार ।

अंधरन केरि बजार में गया एक डिठियार ॥

(१६५)

सब अंधरन के बीच एक है काना राजा ॥
 काना राजा रहै ताहि कै रैयत आँधा ।
 काना को अगुवाइ एक इक पकरिनि काँधा ॥
 बीच मिला दरियाव अंध को ठढ़ कराई ।
 लेन गया वह थाह सँसि^१ लैगा घिसियाई ॥
 साँझ आइ नियरानि अंध सब करै बिचारा ।
 लाग खान को करन बड़ा सरदार हमारा ॥
 आधी रात के बीच सबै मिलि गौगा^२ लाई ।
 भेड़हा^३ बोला आय चलो इक एक बुलाई ॥
 एक एक तुम चलो नाहिं है बासन^४ दूजा ।
 गरदन धै लैजाय करै ताही की पूजा ॥
 पलटू सब को खाय मगन है भेड़हा गाजा ।
 सब अंधरन के बीच एक है काना राजा ॥

॥ दुष्ट ॥

(१६६)

अपकारी जिव जाहिंगे पलटू अपने आप ॥
 पलटू अपने आप संत का सरल सुभाऊ ।
 सब को मानहिं भला नाहिं कछु करहिं दुराऊ ॥
 लाख दुष्ट जो होइ भला तेहू का मानै ।
 आपन ऐसा जीव संत जन सब का जानै ॥
 अपनी करनी जाय होय जो निंदक कोई ।
 आन को गड़हा खनै परैगा आपुहि सोई ॥
 जब देखै वह संत को तब चढ़ि आवै ताप^५ ।

(१) कर्म से भाव हैं । (२) शोर । (३) काल से भाव हैं । (४) बरतन ।

(५) बुखार ।

अपकारी जिव जाहिंगे पलटू अपने आप ॥

(१६७)

बनियाँ बानि न छोड़ै पसँधा मारे जाय ॥

पसँधा मारे जाय पूर को मरम न जानी ।

निसु दिन तौलै घाटि खोय^१ यह परी पुरानी ॥

केतिक कहा पुकारि कहा नहिं करै अनारी ।

लालच से भा पतित सहै नाना दुख भारी ॥

यह मन भा निरलज्ज लाज नहिं करै अपानी ।

जिन हरि पैदा किया ताहि का मरम न जानी ॥

चौरासी फिरि आइ कै पलटू जूती खाय ।

बनियाँ बानि न छोड़ै पसँधा मारे जाय ॥

(१६८)

संत रतन की कोठरी कुंजी दुष्टन हाथ ॥

कुंजी दुष्टन हाथ अटक के खोलहिं जाई ।

संत भये परसिद्ध प्रभुता नाम दिखाई ॥

चकमक भये हैं दुष्ट संत जन जैसे पथरी ।

हरि की प्रभुता आगि प्रगट है वा से निकरी ॥

आगि देखि सब डेरे जगत में भय तब ब्यापी ।

दुष्टन के परताप बस्तु प्रगट भई ढाँपी ॥

पलटू परदा खुलि गया सबै नवावै माथ ।

संत रतन की कोठरी कुंजी दुष्टन हाथ ॥

॥ कर्म भर्म—देई देवा ॥

(१६९)

अंजन देय न ज्ञान का अंधा भया बनाय^२ ॥

अंधा भया बनाय बैद की बात न मानै ।

विषय बयाला^३ खाय, करे संजम ना जानै ॥

लालच रोगिया करै बैद को दोस लगावै ।
 तनिक नहीं बिस्वास आँखि कहवाँ से पावै ॥
 एक होय तो कहौ गाँव का गाँवै बिगरा ।
 दिवसै दीपक बारि पाप का सेते डगरा^१ ॥
 पलटू सब संसार के माड़ा गया है छाया ।
 अंजन दय न ज्ञान का अन्धा भया बनाय ॥

(२००)

जौं लगि परदा पड़ा है धोखा रहा समाय ॥
 धोखा रहा समाय जानै दूजा है कोई ।
 भीतर बाहर एक तसल्लो^२ देखे होई ॥
 जो देखा सो गया रहा जो देखा नाहीं ।
 चोकर लड्डू खाँड़ खाय दोऊ पछिताहीं ॥
 जोई पहुँचा जाय सोई उस घर का मालिक ।
 रहे नाम में डूबि ठिकाने पहुँचे सालिक^३ ॥
 पलटू परदा टारि दे दिल का धोखा जाय ।
 जौं लगि परदा पड़ा है धोखा रहा समाय ॥

(२०१)

बस्तु धरी है पाछे आगे लिहिनि तकाय^४ ॥
 आगे लिहिनि तकाय पाछे की मरम न जानी ।
 ज्यों ज्यों आगे जाय दिनों दिन अधिक दुरानी ॥
 फिरि के ताकै नाहि बस्तु कहवाँ से पावै ।
 ज्यों मिरगा कै बास भरम कै जन्म गवावै ॥
 अरुभा बेद पुरान ज्ञान बिनु को सुरभावै ।
 सतसगत से विमुख बस्तु कहवाँ से पावै ॥
 पलटू छूटै कर्म ना कैसे सकै उठाय ।

(१) पाप के मारग या झण्डे को रखवाली करते हैं । (२) शांति । (३) अभ्यासी ।

(४) चल दिये ।

बस्तु धरी है पाछे आगे लिहिनि तकाय ॥

(२०२)

भूटै में सब जग चला छिल छिल जाता अंग ॥
 छिल छिल जाता अंग धसन भेड़ी की देखा ।
 करम बड़ा परधान गड़ी पत्थर पर मेखा ॥
 साच बात को मेदि भूठ को जाल पसारा ।
 जल पधान के बीच बहै सब सुधी धारा ॥
 परघट है भगवान सकल घट सूझत नाही ।
 जीव से करते दोह भगमना पूजन जाहीं ॥
 पलटू में का से कहौ कुवाँ पड़ी है भंग ।
 भूटै में सब जग चला छिल छिल जाता अंग ॥

(२०३)

लड़िका चूल्हे में लुका ढूँढ़त फिरै पहार ॥
 ढूँढ़त फिरै पहार नहीं घट की सुधि जानै ।
 जप तप तीरथ बस्त जाय के तिल तिल छानै ॥
 गई आप को भूलि और की बात न मानै ।
 चूल्हे लड़िका रहै चतुरई अपनी ठानै ॥
 भरमी फिरै भुलान जाइ के देस देसान्तर ।
 लड़िका से नहि भेट मिलत है पानी पाथर ॥
 पलटू सतसंगति करै भूल में बाही सार^१ ।
 लड़िका चूल्हे में लुका ढूँढ़त फिरै पहार ॥

(२०४)

सूधी मारग में चलौ हँसै सकल संसार ॥
 हँसै सकल संसार करम की राह बताई ।
 लोक बेद की राह चला हम से नहिं जाई ॥
 सूधी लिहा तकाय राह संतन की पाई ।

(१) भूल मिटाने को सतसंग ही सार जतन है।

मन में भया अनन्द छूटि गइ सब दुचिताई ॥
 उन कै इहवै हेतु^१ राह यह हमरी आवै ।
 इहै बूझि कै हँसै हाथ से निबुका^२ जावै ॥
 पलटू सब का एक मत को अब करै बिचार ।
 सुधी मारग में चलौं हँसै सकल संसार ॥

२०५

भरमि भरमि सब जग मुवा भूठा देवा सेव ॥
 भूठा देवा सेव नाम को दिया भुलाई ।
 बाँधे जमपुर जाहिं काल चोटी घिसियाई ॥
 पानी से जिन पिंड गरभ के बीच सँवारा ।
 ऐसा साहिब छोड़ि जन्म औरै से हारा ।
 ऐसे मूर्ख लोग खबर ना करै अपानी ।
 सिरजनहारा छोड़ि पूजते भूत भवानी ॥
 पलटू इक गुरुदेव बिनु दूजा कोय न देव ।
 भरमि भरमि सब जग मुवा भूठा देवा सेव ॥

२०६

संत चरन को छोड़ि कै पूजत भूत बैताल ॥
 पूजत भूत बैताल मुए पर भूतै होई ।
 जेकर जहवाँ जीव अन्त को होवै सोई ॥
 देव पितर सब भूठ सकल यह मन की भ्रमना ।
 यही भरम में पड़ा लगा है जीवन मरना ॥
 देई देवा सेइ परम पद केहि ने पावा ।
 भैरो दुर्गा सीव बाँधि कै नरक पठावा ॥
 पलटू अंत घसीटिहै चोटी धरि धरि काल ।
 संत चरन को छोड़ि कै पूजत भूत बैताल ॥

(२०७)

लिये कुल्हाड़ी हाथ में मारत अपने पाँय ॥
मारत अपने पाँय पूजत है देई देवा ।
सतगुरु संत बिसारि करै भूतन की सेवा ॥
चाहै कुसल गँवार अमीं दै माहुर खावै ।
मने किये से लहै नरक में दौड़ा जावै ॥
पौंडे^१ जल के बीच हाथ में बाँधे रसरी ।
परै भरम में जाइ ताहि को कैसे पकरी ॥
पलटू नर तन पाइ कै भजन मँहै अलसाय ।
लिये कुल्हाड़ी हाथ में मारत अपने पाँय ॥

(२०८)

सात पुरी हम देखिया देखे चारो धाम ॥
देखे चारो धाम सबन माँ पाथर पानी ।
करमन के बसि पड़े मुक्ति की राह भुलानी ॥
चलत चलत पग थके छीन भइ अपनी काया ।
काम क्रोध नहिं मिटे बैठ कर बहुत नहाया ॥
ऊपर डाला धोय मैल दिल बीच समाना ।
पाथर में गयो भूल संत का मरम न जाना ॥
पलटू नाहक पचि मुए सन्तन में है नाम ।
सात पुरी हम देखिया देखे चारो धाम ॥

(२०९)

घर में मेवा छोड़ि कै टेंटी बीनन जाय ॥
टेंटी बीनन जाय जानै येही है मेवा ।
तीरथ मँहै नहाय करै मूरति की सेवा ॥
छोड़ि बोलता ब्रह्म करै पथरे की पूजा ।
खसम न आवै पास नारि जब खोजै दूजा ॥ ०

सूखा हाड़ चबाय स्वान मुख आवै लोहू ।
 रहै हाड़ के भोर^१ भेद ना जानै वोहू ॥
 पलट आगे धरा है माप से नाहीं खाय ।
 घर में मेवा छोड़ि कै टेंगो बीनन जाय ॥

(२१०)

लम्बा घूँघट काढ़ि कै लगवारन से प्रीति ॥
 लगवारन से प्रीति जीव से द्रोह बढ़ावै ।
 • पूजत फिरै पषान नहीं जो बोलै खावै ॥
 • सम्मै पूरन ब्रह्म ताहि को तनिक न मानै ।
 करै नटी^२ को काम लोक परिवर्ता जानै ॥
 • उदर पालना करै नाम ठाकुर को लेई ।
 • सर्व जीव भगवान ताहि को तनिक न सेई ॥
 पलट सबै सराहिये जरै जगत की रीति ।
 लम्बा घूँघट काढ़ि कै लगवारन से प्रीति ॥

(२११)

बहुत पुरुष के भोग से बिस्वा होइ गइ बाँझ ॥
 बिस्वा होइ गइ बाँझ जाहि के पुरुष घनेरे ।
 नाहिं एक की आस फिरै घर घर बहुतेरे ॥
 एक केरि होइ रहै दुसर से होइ गलानी^३ ।
 तुरत गरम रहि जाइ सिवाती^४ चात्रिक पानी ॥
 • गरम पुरुष को छोड़ि करै देवतन की पूजा ।
 • बिस्वा की यह रीति खसम तजि खोजै दूजा ॥
 पलट बिना बिचार से मूरख डूबै माँझ^५ ।
 बहुत पुरुष के भोग से बिस्वा होइ गइ बाँझ ॥

(२१२)

पलट तन करु देवहरा मन करु सालिगराम ॥

(१) भूल । (२) हरजाई । (३) घिन । (४) स्वाँति । (५) मँझघार में ।

मन करु सालिगराम पूजते हाथ पिगने ।
 धावत तीरथ बरत रैन दिन गोड़ खियाने ॥
 माला फेरि न जाय परे अँगुरिन में घट्टा ।
 राम बोलि न जाय जीभ में लागै लट्टा^१ ॥
 निति उठि चन्दन देत माथ कै लोहू सोखा ।
 बालभोग के खात मिट्यो ना मन का धोखा ॥
 जल पषान के पूजते सरा न एको काम ।
 पलटू तन करु देवहरा मन करु सालिगराम ॥

(२१३)

सूधी मेरी चाल है सब को लागै टेढ़ ॥
 सब को लागै टेढ़ बूझ बिनु कौन बतावै ।
 आपु चलै सब टेढ़ टेढ़ हम को गोहरावै ॥
 हम रहते निहकरम नाहि करमन की आसा ।
 तुम्हरे तीरथ बरत बहुरि मूरति बिस्वासा ॥
 हमरे केवल राम आन को नाहीं जानों ।
 तुम्हरे देवता पित्र भूत की पूजा मानो ॥
 पलटू उलटा लोग सब नाहक करते खेद^२ ।
 सूधी मेरी चाल है सब को लागै टेढ़ ॥

(२१४)

मैं अपने रँग बावरी जरि जरि मरते लोग ॥
 जरि जरि मरते लोग सांच नाहक को करते ।
 पर संपति को देखि मूढ़ बिनु मारे मरते ॥
 ना काहू की जाति पाँति हम बैठन जाई ।
 लोग करै चौवाव^३ एक को एक बुलाई ॥
 चलिहौं सूधी चाल राम के मारग माहीं ।
 देव पितर तजि करम माना काहू को नाहीं ॥

पलट्ट हम को देखि कै लोगन के भा रोग ।
मैं अपने रंग बावरी जरि जरि मरते लोग ॥

॥ जीव-हिंसा ॥

(२१५)

लहम कुल्लहुम जिसिम का नबी किया फर्मद^१ ॥
नबी किया फर्मद हदीस की आयत माहीं ।
सब में एकै जान और कोउ दूजा नाहीं ॥
खून गोस्त है एक मौलवी जिवह न छाजै^२ ।
सब में रोसन हुआ नबी का नूर बिराजै ॥
क्यों खैंचै तू रुह^३ गुनहगारी में पड़ता ।
बुजरुग के फर्मद बमोजिब नाहीं डेरता ॥
• पलटू जो बेदरदी सो काफिर मरदूद ।
• लहम कुल्लहुम जिसिम का नबी किया फर्मद ॥

(२१६)

गरदन मारै खसम की लगवारन के हेत ॥
लगवारन के हेत पसू औ मेंढा मारै ।
पूजै दुरगा देव देवखरी सिर दै मारै ॥
माटी देवखरि बाँधि मुए की पूजा लावै ।
जीवत जिउ को मारि आनि कै ताहि चढ़ावै ॥
सब में है भगवान और ना दूजा कोई !
तेकर यह गति करै भला कहवाँ से होई ॥
पलट जिउ को मारि कै बल देवतन को देत ।
गरदन मारै खसम की लगवारन के हेत ॥

॥ जाति भेद ॥

(२१७)

हरि को भजै सो बड़ा है जाति न पूछै कोय ॥

(१) नबी ने फर्माया है कि कुल मांस जानदार की देह से आता है । (२) शोभा नहीं देता । (३) जान ।

जाति न पूछै कोय हरी को भक्ति पियारी ।
 जो कोइ करै सो बड़ा जाति हरि नाहिं निहारी ॥
 • अधिक अजामिल रहे रहे फिर सदन कसाई ।
 • गनिका बिस्वा रही बिमान पै तुरत चढ़ाई ॥
 नीच जाति रैदास आपु में लिया मिलाई ।
 • लिया गिद्ध को गोदि दिया बैकुंठ पठाई ॥
 पलटू पारस के छुए लोहा कंचन होय ।
 हरि को भजै सो बड़ा है जाति न पूछै कोय ॥

(२१८)

साहिब के दरबार में केवल भक्ति पियार ॥
 केवल भक्ति पियार साहिब भक्ती में राजी ।
 तजा सकल पकवान लिया दासीसुत भाजी^१ ॥
 जप तप नेम अचार करै बहुतेरा कोई ।
 खाये सेवरी के बेर^१ मुए सब ऋषि मुनि रोई ॥
 किया युधिष्ठिर यज्ञ बटोरा सकल समाजा ।
 मरदा सब का मान सुपच बिनु घंट न बाजा ॥
 पलटू ऊँची जाति कौ जनि कोउ करै हंकार ।
 साहिब के दरबार में केवल भक्ति पियार ॥

(२१९)

गनिका गिद्ध अजामिल सदना औ रैदास ॥
 सदना औ रैदास भली इनकी बनि आई ।
 निसु दिन रहैं हजूर भक्ति कीन्ही अधिकाई ॥
 जाति न उत्तम येह इन्हें सम और न कोई ।

(१) श्रीकृष्ण ने राजा दुर्योधन का छप्पन प्रकार का भोजन त्याग कर विदुर भक्त का अलोना साग बड़ी रुचि से खाया था और सेवरी के कुतरे हुए बेर बड़े चाव से चख कर अहंकारी ऋषियों और मुनियों के दाँत खट्टे किये ।

ब्रह्मा कोटि कुलीन नीच अब कहिये सोई ॥
 उनसे बड़ा न कोय और सब उन के नीचे ।
 उन्हें बराबर नहीं कोऊ तिलोक्त के बोचे ॥
 अविनासी को गोद में पलटू करै विलास ।
 गनिका गिद्ध अजामिल सदन आ रैदास ॥

॥ निन्दक ॥

(२२०)

निन्दक जीवै जुगन जुग काम हमारा होय ॥
 काम हमारा होय बिना कौड़ी को चाकर ।
 कमर बाँधि के फिरै करै तिहुँ लोक उजागर ॥
 उसे हमारी सोच पलक भर नाहि बिसारी ।
 लगी रहै दिन रात प्रेम से देता गारी ॥
 संत कहै दृढ़ करै जगत का भ्रम छुड़ावै ।
 निन्दक गुरु हमार नाम से वही मिलावै ।
 सुनि के निन्दक मरि गया पलटू दिया है रोय ।
 निन्दक जीवै जुगन जुग काम हमारा होय ॥

(२२१)

निन्दक रहै जो कुसल से हम को जोखों नाहि ॥
 हम को जोखों नाहि गाँठि कौ साबुन लावै ।
 खरचै अपनो दाम हमारी मेल छुड़ावै ॥
 तन मन धन सब देहि संत की निन्दा कारन ।
 लेहि संत तेहि तार बड़े वे अधम-उधारन ॥
 संत भरोसा बड़ा सदा निन्दक का करते ।
 निन्दक की अति प्रीति भाव दूसर नहि धरते ॥
 पलटू वे परस्वारथी निन्दक नर्क न जाहिं ।
 निन्दक रहै जो कुसल से हम को जोखों नाहि ॥

(२२२)

निन्दक है परस्वारथी करै भक्त का काम ॥
 करै भक्त का काम जगत में निन्दा करते ।
 जो वे होते नाहिं भक्त कहवाँ से तरते ॥
 आप नरक में जाहिं भक्त का करें निवेग ।
 फिर भक्तन के हेतु करें चीरासी फेर ॥
 करें भक्त की सोच उन्हें कुछ और न भावै ।
 देखो उनकी प्रीति लगन जब ऐसी लावै ॥
 पलटू धोबो अस मिल्यो धोवत है बिनु दाम ।
 निन्दक है परस्वारथी करै भक्त का काम ॥

॥ मिश्रित ॥

(२२३)

बनिया पूरा सोई है जो तौलै सत नाम ॥
 जो तौलै सत नाम छिमा का टाट बिछावै ।
 प्रेम तराजू करै बाट बिस्वास बनावै ॥
 बिबेक की करै दुकान ज्ञान का लेना देना ।
 गादी है संतोष नाम का मारै टेना ॥
 लादै उलदै भजन बचन फिर मीठे बोलै ।
 कुंजी लावै सुरत सबद का ताला खोलै ॥
 पलटू जिसकी बन परी उसी से मेरा काम ।
 बनिया पूरा सोई है जो तौलै सत नाम ॥

(२२४)

भीतर औंटे तत्व को उठै सबद की खानि ॥
 उठै सबद की खानि रहै अंतर लौ लागी ।
 सुरति देइ उदगारि^१ जोगिनी आपुइ जागी ॥

सहज घाट हरि ध्यान ज्ञान से मन परमोधै ।
 नहि संग्रह नहि त्याग आपनी काया सोधै ॥
 ० प्रेम भभूत लगाइ धरै धीरज मृगछाला ।
 ० तिलक उनमुनो भाल जपत है अजपा माला ॥
 पलटू ऐसा होय जो सो जोगी परमान ।
 भीतर औंठै तत्व को उठै सबद की खानि ॥

(२२५)

बार बार बिनती करै पलटूदास न लेइ ॥
 पलटूदास न लेइ रहै कर जोरे ठाढ़ी ।
 सरनागति मैं रहौ सरन बिनु लागै गाढ़ी^१ ।
 गोड़ दाबि मैं देउं चरन धै सेवा करिहौं ।
 चौका देइहौं लीपि बहुरि मैं पानी भरिहौं ॥
 पैड़ा देउं बुहारि सबन कै जूठ उठावौं ।
 जनि दुरियावहु मोहिं रहै मैं इहवाँ पावौं ॥
 मुक्ति रहै द्वारे खड़ी लट से भाड़ देइ ।
 बार बार बिनती करै पलटूदास न लेइ ॥

(२२६)

सुरति सुहागिनि उलटि कै मिली सबद में जाय ॥
 मिली सबद में जाय कन्त को बसि में कीन्हा ।
 चलै न सिव कै जोर जाय जब सक्ती लीन्हा ॥
 फिर सक्ती ना रही मिली जब सिव में जाई ।
 सिव भी फिर ना रहे सक्ति से सीव कहाई ॥
 अपने मन कै फेर और ना दूजा कोई ।
 ० सक्ती सिव है एक नाम कहने को दोई ॥
 पलटू सक्ती सीव का भेद गया अलगाय ।
 सुरत सुहागिनि उलटि कै मिली सबद में जाय ॥

(२२७)

कहँ खोजन को जाइये घरहीं लागा रंग ॥
 घरहीं लागा रंग छुटे तीरथ व्रत दाना ।
 जल पषान सब छुटे आपु में उडि समाना ॥
 काम क्रोध को छोड़ि परम सुख मिला अनन्दा ।
 लोभ मोह को जारि करम का काटा फंदा ॥
 लगै न भूख पियास जगत की आसा त्यागा ।
 सबद मँहै गलतान सुरति का पोहै धागा ॥
 पलटू दिढ़ है लगि रहै छुटै नहीं सतसंग ।
 कहँ खोजन को जाइये घरहीं लागा रंग ॥

(२२८)

मन माया में मिलि गया मारा गया बिबेक ॥
 मारा गया बिबेक चोर का पहरू भेदी ।
 दोऊ की मति एक सहर में करै अहेदी^१ ॥
 आँधर नगर के बीच भया धमधूसर^२ राजा ।
 करै नीच सब काम चलै दस दिसि दरवाजा ॥
 अधरम आठो गाँठि न्याव बिनु धीगम सूदा^३ ।
 टकमि दमारि^४ गुलाम आप को भयो असूदा^५ ॥
 जानि बूझि कूआँ परै पलटू चलै न देख ।
 मन माया में मिलि गया मारा गया बिबेक ॥

(२२९)

देखो जिउ की खोय को फिर फिर गोता खाय ॥
 फिर फिर गोता खाय तनिक ना लज्जा आवै ।
 पड़िगा वही सुभाव छुटै ना लाख छुटावै ॥

(१) एक लिपि में “अलेदी” है। “अहदी” बादशाही वक्त में बहादुर सिपाही होते थे जो घर बैठे तनखाह पाते थे और सिर्फ भारी मुहिम पर भेजे जाते थे। इन की जबरदस्ती और जुल्म प्रसिद्ध है। (२) मोटे। (३) धींगम धींगा, मनमाना। (४) टका दमड़ी के लिये। (५) संतुष्ट।

निमित्त भरे^१ की खुसी जन्म कोटिन दुख पावै ।
 चौरासी घर जाय आपु में आपु बंधावै ॥
 स्वान लाख जो खाय दिया चाटै पै चाटै ।
 छुटै न जिउ की खोय पकरि के पुरजे काटै ॥
 पलटू भजै न नाम को मूरख नर तन पाय ।
 देखो जिउ की खोय को फिर फिर गोता खाय ॥

(२३०)

मुए पार की बात है फिरै न कोऊ एक ।
 फिरै न कोऊ एक मुक्ति धौं कैसी होती ।
 स्याह जरद या सुख रंग, होरा या मोती ॥
 मुक्ति के हाथ न पाँव मुक्ति को सब कोउ मानै ।
 है परदे की बात ताहि से सब कोउ जानै ॥
 सब कोउ होय खराब मुक्ति के पाछे जाई ।
 जानी केहि बिधि जाय मुक्ति कहु किन ने पाई ॥
 पलटू बातें मुक्ति की खसर फसर करि देख ।
 मुए पार की बात है फिरै न कोऊ एक ॥

(२३१)

चिन्ता रूपी अगिन में जरै सकल संसार ॥
 जरै सकल संसार जरत निरपति को देखा ।
 बादसाह उमसव जरत हैं सैयद सेखा ॥
 सुर नर मुनि सब जरै जोगी और जती सन्यासी ।
 पंडित ज्ञानी चतुर जरै कनफटा उदासी ॥
 जंगम सिवरा जरै जरै नागा बेरागी ।
 तपसी दूना जरै बचै नहिं कोऊ भागी ॥
 पलटू बचते संत जन जेकरे नाम अधार ।

चिन्ता रूपी अग्नि में जरै सकल संसार ॥

(२३२)

जा को निरगुन मिला है भला सरगुन चाल ॥

भला सरगुन चाल बचन ना मुख से आवै ।

तसेबी^१ और किताब नहीं काजी को भावै ॥

पंडित पढ़ै न वेद तीर्थ बैशगी त्यागा ।

कायथ कलम न लेय राज तजि राजा भागा ॥

बेस्वा तजा सिंगार सिद्ध की गइ सिद्धाई ।

रागी भला राग जननि सुत दइ बहाई ॥

पलटू भूली गोथिनी^२ कहूँ भात कहूँ दाल ।

जा को निरगुन मिला है भला सरगुन चाल ॥

(२३३)

अमृत को सागर भर्यो देखे प्यास न जाय ॥

देखे प्यास न जाये पिये बिनु कौन बतावै ।

कल्प बृच्छ को देखि खाये बिनु भख न जावै ॥

और की दौलत देखि दरिदर नाहिं नसाई ।

अन्धा पावै आँखि साच वा की बैदाई ॥

लोहा कंचन होय पारस की करै सरहना ।

क्या मलया की सिफत काठ को काठै रहना ॥

सतगुरु तुम्हरे बचन को पलटू ना पतियाय ।

अमृत को सागर भर्यो देखे प्यास न जाय ॥

(२३४)

जैस नदी एक है बहुतेरे हैं घाट ॥

बहुतेरे हैं घाट भेद भक्तन में नाना ।

जो जेहि संगत परा ताहि के हाथ बिकाना ॥

चाहै जैसी करै भक्ति सब नामहिं केरी ।

जा की जैसी बूझ मारग सो तैसी हेरी ॥
 फेर^१ खाय इक गये एक ठौ गये सिताबी ।
 आखिर पहुँचे राह दिना दस भई खराबी ॥
 पलट एकै टेक ना जेतिक^२ भेष तै बाट ।
 जैसे नही एक है बहुतेरे हैं घाट ॥

(२३५)

साध बचन साचा सदा जो दिल साचा होय ॥
 जो दिल साचा होय रहै ना दुबिधा भागै ।
 जो चाहै सो मिलै बात में बिलंब न लागै ॥
 मन बचन कर्म लगाय संत की सेवा लावै ।
 उकठा काठ बियास^३ साच जो दिल में आवै ॥
 जिनको है बिस्वास तेही को बचन फुरानी^४ ।
 हैगा उन का काम सन्त की महिमा जानी ॥
 पलटू गाँठि में बाँधिये खाली पड़ै न कोय ।
 साध बचन साचा सदा जो दिल साचा होय ॥

(२३६)

महीं भुलाना फिरत हौं कि जगतै गया भुलाय ॥
 जगतै गया भुलाय देखि सब हँसते हम कह ।
 उनकी करनी देखि हँसत हैं हमहूँ उन कह ॥
 बाय जोगी को जगत जगत को जोगी बाई ।
 दोऊ को भौंसै आनि कहाँ अब तीसर पाई ॥
 एक साहु सौ चोर चोर को साहु बनावै ।
 जगत भगत से बैर आपनी दूनौ गावै ॥
 पलटू तीसर है नहीं साखी भरै जो आय ।
 महीं भुलाना फिरत हौं कि जगतै गया भुलाय ॥

(२३७)

जगत भगत से बैर है चारो जुग परमान ॥
 चारो जुग परमान बैर ज्यों मूस बिलाई ।
 नेवर भुवंगम बैर कँवल हिम^१ कर अधिकाई ॥
 हस्ती केहरि^२ बैर बैर है दूध खटाई ॥
 भैंस घोड़ से बैर चोर पहरू से भाई ॥
 पाप पुन्य से बैर अगिन औ बैरी पानी ।
 संतन यही बिचार जगत की बात न मानी ॥
 पलटू नाहक भँकता जोगी देखे स्वान ।
 जगत भगत से बैर है चारो जुग परमान ॥

(२३८)

लेहु परोसिनि भोपड़ा नित उठि बाढ़त शर ॥
 नित उठि बाढ़त शर काहिको सरबरि कीजै ।
 तजिये ऐसा संग देस चलि दूसर लीजै ॥
 जीवन है दिन चारि काहे को कीजै रोसा ।
 तजिये सब जंजाल नाम कै करौ भरोसा ॥
 भीख माँगि बरु खाय खटपटी नीक न लागै ।
 भरी गोण गुड़ तजै तहाँ से साँभै भागै ॥
 पलटू ऐसन बूझि कै डारि दिहा सिर भार ।
 लेहु परोसिनि भोपड़ा नित उठि बाढ़त शर ॥

(२३९)

सिध चौरासी नाथ नौ बीचै सभै भुलान ॥
 बीचै सभै भुलान भक्ति की मारग छूटी ।
 हीरा दिहिन है डारि लिहिन इक कौड़ी फूटी ॥
 खाँड़ माँड़ खुसी जक्त इतनै में राजी ।
 लोक बड़ाई तुच्छ नरक में अटकी बाजी ॥

भूठ समाधि लगाय फिरै मन अतै भटका ।
 उहाँ न पहुँचा कोय बीच में सब कोइ अटका ॥
 पलटू अठएँ लोक में पड़ा दुपट्टा तान ।
 सिध चौगसी नाथ नौ बीचै सभै भुलान ॥

(२४०)

हंस चुगै ना घोंघी सिंह चरै न घास ॥
 सिंह चरै ना घास मारि कुंजर को खाते ।
 जो मुरदा है जाय ताहि के निकट न जाते ॥
 वे ना खाहि असुद्ध रीत कुल की चलि आई ।
 खाये बिनु मरि जाहि दाग ना सकहें लगाई ॥
 सन्त समन सिरताज धरन धारी सो धारी ।
 नई बात जो करै मिलत है उनको गारी ॥
 भोख न माँगै सन्त जन कहि गये पलटूदास ।
 हंस चुगै ना घोंघी सिंह चरै ना घास ॥

(२४१)

कृष्ण कन्हैया लाल है वह गोकुल के घाट ॥
 वह गोकुल के घाट जाइ के गोता मारै ।
 जीवन आसा त्यागि बूढ़ि के ढूँढ़ निकारै ॥
 मान बड़ाई छोड़ि चित्त हरि चरनन लावै ॥
 कुंजगली के बीच जाय तब पिय को पावै ॥
 देखै पिय को रूप सुन्दर बहु स्याम सलोना ।
 बरै तेल की टेम आगि में बरता सोना ॥
 कहि पलटू परसाद यह पावै प्रेम की बाट ।
 कृष्ण कन्हैया लाल है वह गोकुल के घाट ॥

(२४२)

गिरहस्थी में जब रहे पेट को रहे हैरान ॥

पेट को रहे हैरान तसदिया^१ से मिल्यौ अहारा ।
 साग मिल्यौ बिनु लोन रही तब ऐसी धारा ॥
 आये हरि की सरन बहुत सुख तब से पाई ।
 लुचुई^२ चारो जून खाँड औ खोवा खाई ॥
 लेडू पेड़ा बहुत सेंत^३ कोउ खाता नाहीं ।
 जलेबी चीनी कन्द भरा है घर के माहीं ॥
 पलटू हरि की सरन में हाजिर सब पकवान ।
 गिरहस्थी में जब रहे पेट को रहे हैरान ॥

(२४३)

भरि भरि पेट खिलाइये तब रीझैगा भेष ॥
 तब रीझैगा भेष जगत में करै बड़ाई ।
 लाख भगत जो होय खाये बिनु निंदत जाई ॥
 रहनि लखै नहिं कोय नाहिं टकसार बिचारै ।
 भाव भक्ति ना लखै खोजत सब फिरै अहारै ॥
 भेष में नाहिं बिबेक भये दस बीस बिबेकी ।
 कोटिन में दस बीस सन्त तिन रहनी देखी ॥
 पलटू रहै अपान में आन में मारै मेख ।
 भरि भरि पेट खिलाइये तब रीझैगा भेष ॥

(२४४)

कौड़ी गाँठि न राखई हमा-नियामत^४ खाय ॥
 हमा-नियामत खाय नहीं कुछ जग की आसा ।
 छतिस ब्यंजन रहै सबर से हाजिर खासा ॥
 जेकरे है सत नाम नाम की चेरी माया ।
 जोरु कहवाँ जाय खसम जब कैद में आया ॥
 माया आवै चली रैन दिन में दुरियावों ।
 सतगुरु दास कहाय नहीं मैं माँगन जावों ॥

(१) कष्ट । (२) पुरी । (३) मुफ्त । (४) छप्पन प्रकार का भोजन ।

राजा औ उमराव हाथ सब बाँधे आवैं ।
 द्वारे से फिरि जायँ नहीं फिर मुजरा पावैं ॥
 जंगल में मंगल करै पलटू बेपरवाय ।
 कौड़ी गाँठि न राखई हमा-नियामत खाय ॥

(२४५)

जब देखौ तब सादी नौबत आठौ पहर ॥
 नौबत आठौ पहर गैब की निसु दिन भरती ।
 पचरँग जोड़ा खुसी दुखेस को सादी चढ़ती ॥
 आफताब^१ भा सूर^२ रोसनी दिल में आई ।
 फिरै गैब का छत्र जिकर^३ का मुस्क^४ लगाई ॥
 अन्दर भूलै फील^५ खाव में खतरा नाहीं ।
 सबर है पीठी पलँग सेहरा नाम इलाही ॥
 पलटू जलवा नूर का ज्याँ दरियाव में लहर ।
 जब देखौ तब सादी नौबत आठौ पहर ॥

(२४६)

रन का चढ़ना सहज है मुसकिल करना जोग ॥
 मुसकिल करना जोग चित्त को उलटि लगावै ।
 बिषय बासना तजै प्रान ब्रह्मंड चढ़ावै ॥
 साधै वायू प्रान कुण्डली करै उथपना^६ ।
 अष्ट कँवल दल उलटि कँवल दल द्वादस लखना ॥
 इंगला पिंगला सोधि बंक के नाल चढ़ावै ।
 चार कला को तोड़ि चक्र पट जाय बिधावै ॥
 पलटू जो संजम करै करै रूप से भोग ।
 रन का चढ़ना सहज है मुसकिल करना जोग ॥

(१) सूरज । (२) अंधा । (३) सुमिरन । (४) कस्तूरी । (५) हाथी । (६) कुण्डलिन /
 नाडी का मुँह ऊपर करै ।

(२४७)

आगि लागि मसि जरि गई कागद जरै न कोय ॥
 कागद जरै न कोय कागद है बहुत पुराना ।
 अक्खर^१ आवै जाय अक्खर को नाहि ठिकाना ॥
 वो भी जरै बनाय अक्खर का लिखनेहार ।
 बाँचै सो जरि जाय जरै जो करै बिचारा ॥
 कोठिन अक्खर बाद अन्त कागद भी जरता ।
 कागद जरे के बाद रहै कागद का करता ॥
 पलटू जब कागद जरै वा दिन मेरा होय ।
 आगि लागि मसि जरि गई कागद जरै न कोय ॥

२४८

तबक चारदह अन्दर है अस्थल बे दरियाव ॥
 अस्थल बे दरियाव अर्श कुसीं खुद दीदन ।
 • तूबा दरखत अजु हृद शीरी मेवा खुर्दन ॥
 नूर तजल्ली रूह लाहूत रसीदा नादिर ।
 रौशन-जमीर बेचूँ सीना-साफ काजी कादिर ॥
 हूह गुप्तन फना रूह की सोई बातिन ।
 पाक अल्लाह भकान तहाँ को भी वो साकिन ॥
 पलटू आरिफ़ से कहै तू भी चाहो जाव ।
 तबक चारदह अन्दर है अस्थल बे दरियाव ॥

(१) अक्षर । (२) कुण्डलिया नं० २४८ चौदहवें भुवन में बिना पानी के धरती है जहाँ खुदा का तख्त [अर्श व कुसीं] दोख पड़ता है और कल्प वृक्ष [तूबा दरखत] का अत्यन्त स्वादिष्ट फल खाने को मिलता है [खुर्दन] । उस शून्य लोक [लाहूत] में पहुँची हुई [रसीदा] सुरत का प्रकाश विचित्र हो जाता है और वह अंतर-यामी, अद्वितीय [बेचूँ] निर्मल हृदय [रौशन जमीर] अधिष्ठाता [काजी] और सब शक्तिमान [कादिर] हो जाती है । वही पावन स्थान अल्लाह का है जहाँ ॐ ॐ का शब्द गाजता है [हूह गुप्तन और सुरत विदेह होने पर वहीं बासा पाती है [साकिन] ।

(२४६)

बस्ती माहिं चमार की बाम्हन करत बेगार ॥
 बाम्हन करत बेगार लोग सब गैर-बिचारी ।
 मूरख है परधान देहि ज्ञानी को गारी ॥
 अद्वैता को मेटि द्वैत कै करते थापन ।
 दौलत के सम्बन्ध अमल वे करते आपन ॥
 ज्ञानि महरसी^१ सन्त ताहि की निन्दा करते ।
 अज्ञानी के मध्य सिफत वे अपनी धरते ॥
 पलटू पीतर कनक को कोउ न करै बिचार ।
 बस्ती माहिं चमार की बाम्हन करत बेगार ॥

(२५०)

कुत्ता हाँड़ी फँसि मुवा दोस परोसि क देय ॥
 दोस परोसि क देय आपनौ हठ नहिं मानै ।
 न्योत रही लगवार खसम से परदा तानै ॥
 कपड़ा की सुधि नाहिं नंगी है पड़ी उतानी ।
 कोऊ मने जो करै बोलती करकस बानी ॥
 माया कै लग भूत खसम कौ नाहिं डेराती ।
 घर की सम्पति छाड़ि और की जोगवै थाती ॥
 पलटू कूसंगति पड़ी पिउ कै नाम न लेय ।
 कुत्ता हाँड़ी फँसि मुवा दोस परोसि क देय ॥

(२५१)

जा के रथ पर राम हैं को करि सकै अकाज ॥
 को करि सकै अकाज बार नहीं वा कौ बाँकै ।
 चक्र सुदर्शन छुटै कोऊ कुनजर से ताकै ॥
 लोहू ढारैं राम सन्त कौ ढरै पसीना ।
 का बालक पहलाद भया हरिनाकुस पीना^२ ॥

करि पंडों की पैज भरथ^१ कौ दिया जिताई ॥

अम्बरीक के हेतु दुर्बसै नाच नचाई ॥

पलटू मार्यौ ग्राह कौ हाँक^२ दियौ गजराज ।

जा के रथ पर राम हैं कौ करि सकै अकाज ॥

होनी रही सो है ^(२५२) गई रोइ मरै संसार ॥

रोइ मरै संसार काज कुछ उन से नाहीं ।

गये हाथ से निबुकि, तेही सब पछिताहीं ॥

भये काग से हंस काग सब निन्दा करते ।

लोहा से भये कनक सोच सब लोहा मरते ॥

ज्ञानी अब हम भये रोवै सब मूरख संगी ।

तिल से भये फुलेल तेल सब मार तिलंगी ॥

पलटू उतरे पार हम भाड़ भोकि सब भार ।

होनी रही सो है गई रोइ मरै संसार ॥

^(२५३) सिव सक्ती के मिलन में मो कौ भयौ अनन्द ॥

मो कौ भयौ अनन्द मिल्यौ पानी में पानी ।

होऊ से भा सूत नहीं मिलि कै अलगानी ॥

मुलुक भयौ सलतन्त मिल्यौ हाकिम कौ राजा ।

रैयत करै अराम खोलि कै दस दरवाजा ॥

• छूटी सकल बियाधि मिठी इन्द्रिन की दुतिया ।

• को अब करै उपाधि चोर से मिलि गइ कुतिया ॥

पलटू सतगुरु साहिब काटौ मेरौ बन्द ।

सिव सक्ती के मिलन में मो कौ भयौ अनन्द ॥

^(२५४) ऐसा ब्राह्मन मिलै जो ता के परछौ पाँय ॥

(१) पांडवों के साथ अपना प्रण रख कर श्रीकृष्ण ने महाभारत की लड़ाई उन्हें जिता दी । (२) पुकार । (३) निकल ।

ता के परछों पाँय ब्रह्म अपने को पावै ।
 भर्म जनेऊ तोरि प्रेम तिरसूत बनावै ॥
 सब कर्मन को करै कर्म से रहता न्यारा ।
 दुतिया देइ बहाय ब्रह्म का करै बिचारा ॥
 ज्ञान दिवस में सयन मोह रजनी में जागै ।
 पारब्रह्म भगवान ताहि घर भिच्छा माँगै ॥
 ० चेतन देइ जगाय ब्रह्म की गाँठि को खोलै ।
 ० करै गायत्री गुप्त सब्द ब्रह्मांड में बोलै ॥
 पलटू तजै अठारह सहस बरन है जाय ।
 ऐसा ब्राह्मन मिलै जो ता के परछों पाँय ॥

(२५५)

सब बैरागी बटुरि कै पलटुहि किया अजात ॥
 पलटुहि किया अजात पभुता देखि न जाई ।
 बनिया काल्हिक^१ भक्त प्रगट भा सब दुतियाई^२ ॥
 हम सब बड़े महन्त ताहि को कोउ न जानै ।
 बनिया करै पखंड ताहि को सब कोउ मानै ॥
 ऐसी इर्षा जानि कोऊ ना आवै खाई ।
 बनिया ढोल बजाय रसोई दिया लुटाई ॥
 मालपुवा चारिउ बरन बाँधि लेत कछु खात ।
 सब बैरागी बटुरि कै पलटुहि किया अजात ॥

(२५६)

होंग लगाइस भात में भूल गई है नार ॥
 भूल गई है नार आन के आने कीन्हा ।
 कातिस मोटा सूत कातन को चाही भीना ॥
 लहंगा पाछे जरे चूल्ह में पानी नावा ।

हंसिया को है ब्याह गीत खुरपा कै गावा ॥
 देय महावर आँख गोड़ में काजर लावै ॥
 ऐसी भोली नारि ताहि को को समुझावै ॥
 पलटू वाहि अबूझ है अंत खायगी मार ॥
 हींग लगाइस भात में भूल गई है नार ॥

(२५७)

घरिया ओटै तत्व की परै नाम टकसार ॥
 पढ़ै नाम टकसार द्वादस सन^१ बहुत करकरा ॥
 ज्ञान चोख से चोख रेनि दिन पढ़ै धरधरा ॥
 चौकस करै बिबेक सरन जो जौ भरि आवै ॥
 ऐसा सिक्का होय कोई ना बट्टा लावै ॥
 दंवै ठासा बेहद परै सनवाती सीका^२ ॥
 चारि खूंट में चलै जियत इक होय रती का ॥
 पलटू बानो पस कह लैहै सन्त बिचार ॥
 घरिया ओटै तत्व की परै नाम टकसार ॥

(२५८)

सतगुरु के परताप से पकरा पाँचो चोर ॥
 पकरा पाँचो चोर नगर में अदल चलाया ॥
 तिगुन दिया निकारि आनि कै भक्ति बसाया ॥
 लोभ मोह को पकरि ताहि की गरदन मारी ॥
 तृस्ना औ हंकार पेट दियो इनको फारी ॥
 दुर्मति दई निकारि सुमति का चाबुक दीन्हा ॥
 चढ़े सिपाही संत अमल कायागढ़ कीन्हा ॥
 पलटू संजम में किया पस मुलुक में सोर ॥
 सतगुरु के परताप से पकरा पाँचो चोर ॥

(२५६)

दूसर जनमत मारिये की बरु रहिये बाँझ ॥
 दूसर जनमत मारिये की बरु रहिये बाँझ ॥
 की बरु रहिये बाँझ कोख में दाग लगावै ।
 जामै^१ पेड़ मदार ताहि में क्या फल आवै ॥
 जो जनमै हरि भक्त जगत में सोभा पावै ।
 कुल में फूलै कमल पुत्रवंतो कहवावै ॥
 कौसल्या देवकी बड़ी अब कहिये सोई ।
 हरि जन में हरि रहै भार जिन लीन्हा दोई ॥
 ० पलटू सोई पुत्रवती भक्त रहै जेहि माँझ^२ ।
 दूसर जनमत मारिये की बरु रहिये बाँझ ॥

(२६०)

आगि लगो वहि देस में जहँवाँ राजा चोर ॥
 जहँवाँ राजा चोर प्रजा कैसे सुख पावै ।
 पाँच पचीस लगाइ रैन सदा मुसावै ॥
 आठौ पहर उपाधि रहै नाना विधि लागी ।
 काम क्रोध हंकार सकै ना रैयत भागी ॥
 लोभ मोह की दिनै^३ गले बिच नावै फाँसी ।
 लोक लाज मरजाद चलावै तिरगुन गाँसी ॥
 पलटू रैयत क्या करै चलै न एको जोर ।
 आगि लगो वहि देस में जहँवाँ राजा चोर ॥

(२६१)

यह अचरज हम देखिया कानी काजर देइ ॥
 कानी काजर देइ खसम के मन ना मानै ।
 निसि दिन करै सिंगार भेद या बिरला जानै ॥
 नख सिख खोटी मोटि पहिरि कै बैठी गहना ।

मूरख देखन जाय देखि कै करै सरहना ॥
 बोलै मीठी बोल सबन को बेगि रिभावै ।
 नाहिं खसम से भेंट बैठि कै बात बनावै ॥
 पलटू या संसार में भुठ कहै सो लेय ।
 यह अचरज हम देखिया कानी काजर देय ॥

(२६२)

मुसलमान रब्बी मेरी हिन्दू भया खरीफ ॥
 हिन्दू भया खरीफ दोऊ है फसिल हमारी ।
 इनको चाहै लेइ काटि कै बारी बारी ॥
 साल भरे में मिली यहो हम को जागीरी ।
 चाकर भये हजुरी कौन अब करै तगीरी^१ ॥
 दूनों को समुझाइ ज्ञान का दफतर खोलै ।
 सब कायल होइ जाय अमल दै कोऊ न बोलै ॥
 दोऊ दीन के बीच में पलटूदास हरीफ^२ ।
 मुसलमान रब्बी मेरी हिन्दू भया खरीफ ॥

(२६३)

नाचन को ढँग नाहिं है कहती आँगन टेढ़ ॥
 कहती आँगन टेढ़ जक्त की लाज लजाई ।
 लम्बा घूँघट काढ़ि डुरै^३ फिर नाचन आई ॥
 जाति बरन मरजाद छुटी ना लोक बड़ाई ।
 करै खसम को चाह खसम का^४ सहजै पाई ॥
 अपनी बात उड़ाइ आपु से जैसे भूसा ।
 भौंसै पेड़ बनाय पाछे से फड़िहै फरसा^५ ॥
 पलटू पावै खसम को रहै संत की खेद ।

(१) तंगी । (२) निपुन । (३) लोक लाज के डर से लम्बा घूँघट काढ़ कर ।

(४) क्या । (५) लोक लाज और कुल कानि की पौद को झुलस डाले नहीं तो बढ़ जाने पर फरसा से काटने की जरूरत होगी ।

नाचन को ढंग नाहिं है कहती आँगन टेढ़ ॥

(२६४)

पलटू खोजै पूरबे घर में है जगन्नाथ ॥
 • धर में है जगन्नाथ सकल घट व्यापक सोई ।
 • पसु पंखी चर अचर और नहिं दूजा कोई ॥
 पूरन प्रगटे ब्रह्म देह धरि सब में आये ।
 दिया कर्म को आइ भेद यह बिखलन पाये ॥
 उपजै बिनसै देह जीव सो मरता नाहीं ।
 कहन सुनन को जुदा रहत है सब घट माहीं ॥
 चलते चलते पग थका एको लगा न हाथ ।
 पलटू खोजै पूरबे घर में है जगन्नाथ ॥

(२६५)

आन को सेंदुर देखि कै तू का फोरै लिलार^१ ॥
 तू का फोरै लिलार नारि तू बड़ी अनारी ।
 तू ना देवै जाय देखि क्या जरै हमारी ॥
 तेरे कर्म में नाहिं देखि क्या सरबर^२ करती ।
 चलि जा अपनी राह सोच में नाहक परती ॥
 जेकँ है चाहै पीव ताहि को करै सोहागिनि ।
 समुझ आपनी चूक नारि तू बड़ी अभागिनि ॥
 पलटू सेवै साधु को तब रीझै करतार ।
 आन को सेंदुर देखि कै तू का फोरै लिलार ॥

(२६६)

पलटू पारस नाम का मनै रसायन होय ॥
 मनै रसायन होय करै या तन की सीसी ।
 • संपुट दै गुरु ज्ञान बिस्वास दवाई पीसी ॥
 • दसौ दिसा से मूँदि जोग की भाठी बारै ।

तेहि पर देहि चढ़ाय ब्रह्म की अग्नि से जरै ॥
 ईंधन लावै ध्यान प्रेम रस करै तयारी ।
 सबद सुरति के बीच तहाँ मन राखै मारी ॥
 जड़ि बूटी के खोजते गई सिध्याई खोय ।
 पलटू पारस नाम का मनै रसायन होय ।

(२६७)

कहत फिरत हम जोगी, पक्का दुइ सेर खाय ॥
 पक्का दुइ सेर खाय, कहै मैं बड़का जोगी ।
 सोवै टाँग पसारि, देखत कै बड़ा बिशोगी ॥
 हृष्ट पुष्ट होइ रहै, लड़न को नाहीं माँदा^१ ।
 काम क्रोध और मोह, करत हैं बाद बिबादा ॥
 पलटू ऐसा देखि कै, मुँह ना राखी लाय ।
 कहत फिरत हम जोगी, पक्का दुइ सेर खाय ।

(२६८)

जल पषान को छोड़ि कै पूजौ आतम देव ॥
 पूजौ आतम देव खाय औ बोलै भाई ।
 छाती दैकै पाँव पथर की मुरत बनाई ॥
 ताहि धोय अन्हवाय बिजन लै भोग लगाई ।
 साच्छात भगवान द्वार से भूखा जाई ॥
 काह लिये बैराग भूँउ के बाँधे बाना ।
 भाव भक्ति की मरम है कोइ बिरले जाना ॥
 पलटू दोउ कर जोरि कै गुरु संतन को सेव ।
 जल पषान को छोड़ि कै पूजौ आतम देव ॥

(१) थका या निर्बल ।

